इंटरनेट पर देखें
www.dainikdawa.com

संस्कारधानी से प्रकाशित मध्यभारत व छत्तीसगढ़ अंचल का सर्वप्रसारित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र

भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन से विज्ञापन के लिए अधिकृत

दैनिक प्रातः संस्करण

"यो आत्मानं वेत्ति, सर्वं स वेत्ति"।।

दावा

सम्पादक - दीपक भाई बुद्धदेव

आर.एन.आई.नं. 58841/93
डाक पंजीयन छ.ग./दुर्ग/14/2024-26

वर्ष- 45 अंक - 262 राजनांदगांव, रविवार 09 अगस्त 2026 पृष्ठ - 8 मूल्य - 4.00 रुपए

'लोकसभा सीटें फ्रीज की जाएं, 40-50 साल तक न हो बदलाव', परिसीमन के खिलाफ तमिलनाडु विधानसभा में आएगा प्रस्ताव

चेन्नई। केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तावित लोकसभा सीटों के परिसीमन के मुद्दे पर तमिलनाडु की राजनीति गरमा गई है। मुख्यमंत्री सी. जोसफ विजय की अध्यक्षता में हुई सत्ताधारी गठबंधन और मित्र दलों के सांसदों की एक उच्चस्तरीय बैठक में केंद्र की इस योजना का पुरजोर विरोध करने का एकसम्मत और कड़ा निर्णय लिया गया है।

'राज्य के हितों पर कुठाराघात' बताते हुए टीवीके सरकार ने मांग की है कि लोकसभा सीटों की संख्या 543 और तमिलनाडु के हिस्से की 39 सीटें यथावत रखी जाएं तथा 'परिसीमन फ्रीज' को अगले 25 वर्षों के लिए और बढ़ाया जाए।

परिसीमन के खिलाफ लाएंगे प्रस्ताव

तमिलनाडु की सभी पार्टियों के सांसदों और मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय के बीच हुई बैठक के बाद, तमिलनाडु सरकार राज्य में परिसीमन (सीटों के पुनर्निर्धारण) की प्रक्रिया शुरू करने के किसी भी कदम पर औपचारिक रूप से अपनी आपत्ति जताने के लिए विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित करेगी।

सूत्रों के मुताबिक, नेताओं ने एकजुट होकर किसी भी परिसीमन प्रक्रिया का विरोध करने का फैसला किया। उनका तर्क है कि राज्य कम से कम 40-50 वर्षों तक चुने हुए प्रतिनिधियों की सीटों की संख्या में बदलाव का बोझ नहीं उठा सकता।

कांग्रेस सांसद जोतिमणि ने कहा, हम परिसीमन का समर्थन नहीं करेंगे। मुख्यमंत्री विजय ने यह सर्वदलीय बैठक बुलाकर बहुत अच्छा कदम उठाया है। अगर परिसीमन लागू किया जाता है, तो लोकतंत्र अपने असली स्वरूप में नहीं रहेगा। मुख्यमंत्री ने तमिलनाडु के लोगों के हितों और अधिकारों की रक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

बदलाव की कोई आवश्यकता नहीं

बैठक के बाद पत्रकारों को जानकारी देते हुए कानून मंत्री आर. निर्मल कुमार ने स्पष्ट किया कि वर्तमान परिस्थितियों में जनप्रतिनिधियों की संख्या में कोई बदलाव की आवश्यकता नहीं है।

आर. निर्मल कुमार ने केंद्र की भाजपा सरकार पर चुनावी गणित साधने और आसान जीत हासिल करने के उद्देश्य से परिसीमन थोपने का गंभीर आरोप लगाया। चर्चा में कांग्रेस, वीसीके, एमडीएमके, आइयूएमएल, भाकपा और माकपा सहित विभिन्न दलों के कुल 19 सांसदों ने हिस्सा लिया। हालांकि, मुख्य विपक्षी दल द्रमुक और प्रमुख विपक्षी दल अन्नाद्रमुक ने इस बैठक का बहिष्कार किया। द्रमुक ने इसे ÷प्रहसन÷ और अन्नाद्रमुक ने 'बाजीगरी भरा नाटक' करार दिया। राजनीतिक विरोध के बावजूद वीसीके प्रमुख व सांसद थोल थिरुमावलवन और कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम ने विश्वास जताया कि राज्य के सभी दल परिसीमन के मुद्दे पर अंततः एक ही सुर में तमिलनाडु के अधिकारों की रक्षा के लिए खड़े होंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह परिसीमन लागू होता है, तो जनसंख्या नियंत्रण में बेहतर प्रदर्शन करने वाले दक्षिण भारतीय राज्यों, विशेषकर तमिलनाडु का संसद में प्रतिनिधित्व और राजनीतिक प्रभाव कम हो सकता है। यही कारण है कि तमिलनाडु की राजनीति में इस प्रस्ताव को लेकर भारी आक्रोश देखा जा रहा है।

परिसीमन के पूरी तरह खिलाफ नहीं है द्रमुक

द्रमुक सांसद कनीमोरी ने स्पष्ट किया है कि उनकी पार्टी परिसीमन के पूरी तरह खिलाफ नहीं है, बल्कि वह एक निष्पक्ष प्रक्रिया की मांग करती है। उन्होंने कांग्रेस सांसदों के उस आरोप का जवाब दिया जिसमें उन्होंने द्रमुक पर मुख्यमंत्री के सर्वदलीय सांसदों की बैठक का बहिष्कार करने की आलोचना की थी। कनीमोरी ने कहा कि द्रमुक का विरोध केवल उस अभ्यास से है जिससे संसद में तमिलनाडु की आवाज कम हो सकती है।

लोकसभा में आज लाए जाएंगे चार बड़े बिल, केरल का नाम बदलकर 'केरलम' करने समेत कई प्रस्ताव होंगे पेश

नई दिल्ली। लोकसभा में सोमवार को लाए जाएंगे चार बड़े बिल, केरल का नाम बदलकर 'केरलम' करने समेत कई प्रस्ताव होंगे पेशलोकसभा में सरकार सोमवार को चार महत्वपूर्ण विधेयक पेश करेगी।

सोमवार को लोकसभा में केंद्र सरकार अपने विधायी एजेंडे के तहत चार महत्वपूर्ण विधेयक पेश करने जा रही है. इनमें केरल का नाम बदलकर ÷केरलम÷ करने से लेकर सहकारिता, ट्रिब्यूनल व्यवस्था और खनन क्षेत्र में बड़े बदलाव से जुड़े प्रस्ताव शामिल हैं. इन विधेयकों पर राजनीतिक और प्रशासनिक स्तर पर विशेष नजर बनी हुई है.

गृह मंत्री अमित शाह लोकसभा में केरल (नाम में परिवर्तन) विधेयक, 2026 पेश करेंगे. यह विधेयक केरल विधानसभा द्वारा पारित प्रस्ताव के बाद लाया जा रहा है. केंद्र सरकार की कैबिनेट पहले ही इस बदलाव को मंजूरी दे चुकी है. विधेयक के जरिए संविधान की पहली अनुसूची में संशोधन कर राज्य का आधिकारिक नाम 'केरल' से बदलकर 'केरलम' करने का प्रस्ताव रखा जाएगा.

सहकारिता क्षेत्र को मिलेगी मजबूती

अमित शाह ही राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम (एनसीडीसी) विधेयक, 2026 भी सदन में

(शेष पृष्ठ 6 पर...)

प्रयागराज में 'छात्रों की गूंज', राहुल गांधी बोले- सिस्टम के चक्रव्यूह में फंसे छात्र, रोजगार के दरवाजे बंद

प्रयागराज। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी शनिवार को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज पहुंचे. वहां उन्होंने छात्रों की गूंज कार्यक्रम में हिस्सा लिया. पेपर लीक को लेकर केंद्र सरकार को घेरा और युवा शक्ति का जिक्र किया. उन्होंने जोर देकर बोला कि आज के नौजवान ने जो हिम्मत दिखाई है, वो काबिले तारीफ है.

राहुल गांधी ने कहा कि आज शाम मैं आपसे दर्द, डेटा और दौलत की बात करना चाहता हूं.आपका दर्द, आपका डेटा, मगर आपका धन नहीं, जो आपका होना चाहिए. आप भारत की शक्ति हो, भारत की शान हो, भारत की स्ट्रेंथ हो.और जब मैं कहता हूं आप भारत की शक्ति हो, भारत की स्ट्रेंथ हो. मैं हर हिंदुस्तान के नागरिक, हर यूथ की बात कर रहा हूं. इंडिविजुअल्स की बात कर रहा हूं. आप सब में इंटेलिजेंस है, इमेजिनेशन है, कैपेसिटी है. और अगर ये देश आगे बढ़ेगा, तो आपके बल पे, आपकी स्ट्रेंथ पे इस देश का फ्यूचर बनेगा. इस युवा ने जो कहा है, वो हिंदुस्तान के युवाओं के दिल की बात है।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि आप जैसे एनर्जेटिक युवा इस देश में रहते हैं, ये इस देश की स्ट्रेंथ है. चाइना की बात होती है, अमेरिका की बात होती है, रशिया की बात होती है, इंडिया के यूथ के सामने, इंडिया के यूथ पोटेंशियल के सामने ये सब लोग कुछ नहीं है. एक और चीज हुई है. 21वीं सदी में अगर देश प्रगति करता है तो दो चीजों के बल पर करता है. यूथ पोटेंशियल जो आप में है और डेटा जो आप क्रिएट करते हो.

प्रयागराज में लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा, इस देश में आप जैसे 40 करोड़ ऊर्जावान युवा हैं, यही देश की ताकत है। चीन, अमेरिका और रूस की बात होती है लेकिन भारत के युवाओं और उनकी क्षमता के सामने वे सब कुछ नहीं हैं। कांग्रेस नेता बोलते हैं कि डेटा से आप एआई बना सकते हो. मगर एआई से आप डेटा पैदा नहीं करते हो कर सकते हो. और ये डेटा ये डेटा हिंदुस्तान का है और आपका है. आप इसको क्रिएट करते हो. ये आप बनाते हो, ये आपका इमेजिनेशन है. ये हिंदुस्तान की पूंजी है, स्ट्रेंथ है, एसेट है.

यूपीआई पेमेंट पर नहीं लगेगा कोई चार्ज, सरकार ने कर दिया क्लीयर

नई दिल्ली। यूपीआई ट्रांजैक्शन को लेकर लोगों के बीच काफी उलझन है। लोकसभा में टैक्सेशन एंड अदर लॉज (अमेंडमेंट) बिल, 2026 बिल पास किया गया है, जिसमें बैंकों को मर्चेंट से फीस लेने की इजाजत के बारे में जिक्र है। इसी बिल के पास होने बाद से ये सवाल खड़े हो गए कि क्या यूपीआई ट्रांजैक्शन पर फीस लगेगी या नहीं। हालांकि, सरकार ने साफ बताया है कि यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस या यूपीआई ट्रांजैक्शन यूजर्स के लिए मुफ्त बने रहेंगे। वित्त मंत्रालय ने प्रेस रिलीज में कहा है कि यूपीआई पेमेंट करने पर यूजर्स से कोई चार्ज नहीं लिया जाएगा और सभी पर्सन-टू-पर्सन ट्रांजैक्शन मुफ्त रहेंगे। सरकार ने बताया कि अगर भविष्य में मर्चेंट डिस्काउंट रेट

(एमडीआर) लागू किया जाता है तो यह केवल एक तय सीमा से ज्यादा वाले मर्चेंट ट्रांजैक्शन की सीमित कैटेगरी पर लागू होगा और मामूली दर पर लगाया जाएगा। ये डेबिट और क्रेडिट कार्ड ट्रांजैक्शन पर लागू होने वाले से एमडीआर काफी कम होगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, सरकार बैंकों और पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर्स को 2,000 रुपये से ज्यादा के यूपीआई पेमेंट पर 0.25 प्रति. से 0.4 प्रति. का एमडीआर लगाने की इजाजत दे सकती है, वो भी तब, जब ट्रांजैक्शन किसी बिजनेस के साथ किया जाता है। नतीजतन, दूध, सब्जी, किराने का सामान, ऑटो-रिक्शा की सवारी और टैक्सी किराए जैसे रोजमर्रा के पेमेंट पर असर पड़ने की उम्मीद नहीं है।

मोदी ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से फोन पर की बात, रणनीतिक साझेदारी मजबूत करने पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से फोन पर बात की. पीएम ऑफिस की तरफ से दी गई जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अमेरिकी उपराष्ट्रपति का फोन आया. प्रधानमंत्री और उपराष्ट्रपति वेंस ने भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी में हुई प्रगति की समीक्षा की. साथ ही दोनों नेताओं ने क्षेत्रीय और वैश्विक घटनाक्रमों पर विचारों का आदान-प्रदान भी किया. पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस का फ़ोन आया. हमने अहम क्षेत्रों में भारत-अमेरिका की व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और मज़बूत करने के तरीकों पर चर्चा की. उनके बेटे के जन्म पर

(शेष पृष्ठ 6 पर...)

पहला कॉलम...

आज डॉ. सुरभि मोहबे करेंगी स्वास्थ्य जांच

राजनांदगांव (दावा)। ग्राम पंचायत बोरी में 9 अगस्त 2026 को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर का आयोजन सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक ग्राम पंचायत बोरी परिसर में होगा। शिविर में ग्रामीणों को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं चिकित्सकीय परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

शिविर में डॉक्टर सुरभि मोहबे सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल राजनांदगांव की विशेषज्ञ डॉक्टर सुरभि मोहबे के साथ अन्य चिकित्सक भी उपस्थित रहेंगे। ग्रामीणों को विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की जांच एवं चिकित्सकीय परामर्श निःशुल्क प्रदान किया जाएगा।

ग्राम पंचायत बोरी के सरपंच जीवन लाल साहू ने क्षेत्र के ग्रामीणों से अधिक से अधिक संख्या में शिविर में उपस्थित होकर निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि समय पर स्वास्थ्य जांच और उचित चिकित्सकीय परामर्श से कई बीमारियों की पहचान एवं उपचार में मदद मिल सकती है।

आज मनेगा भव्य 'विश्व आदिवासी दिवस'

श्री मांझी अंतरराष्ट्रीय समाजवाद आदिवासी किसान सैनिक संस्था एवं अभा माता दंतेवाड़िन समाज समिति का संयुक्त आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। श्री मांझी अंतरराष्ट्रीय समाजवाद आदिवासी किसान सैनिक संस्था (कंगला मांझी सरकार) नई दिल्ली एवं अखिल भारतीय माता दंतेवाड़िन समाज समिति नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 9 अगस्त (विश्व आदिवासी दिवस) के अवसर पर राजनांदगांव के पद्मश्री गोविंदराम निर्मलकर ऑडिटोरियम में एक भव्य सामाजिक-सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय स्तर के आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से संस्था के सैनिक, समाज प्रमुख और आम नागरिक बड़ी संख्या में शिरकत करेंगे।

कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण एवं गतिविधियाँ

समारोह के दौरान राजनांदगांव शहर में संस्था के सैनिकों एवं समाजजनों द्वारा एक विशाल रैली निकाली जाएगी। इस रैली में आदिवासियों के पारंपरिक लोकनृत्य, पारंपारिक वाद्य यंत्रों की गूंज और समृद्ध आदिवासी संस्कृति की अनुपम झलक देखने को मिलेगी। कंगला मांझी अचीवर्स अवार्ड 2026 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल, कला, शिक्षा, साहित्य व विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभावान आदिवासी प्रतिभाओं को संस्था द्वारा प्रतिवर्ष सम्मानित किया जाता है। इसी कड़ी में इस वर्ष कोंडागांव जिले के कोरकोटी गाँव की होनहार बालिका कु. रंजीता कोरेटी को कंगला मांझी अचीवर्स अवार्ड 2026' से नवाज़ा जाएगा। कु. रंजीता ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय जुड़ो प्रतियोगिताओं में 4 स्वर्ण पदक जीतकर देश व छत्तीसगढ़ राज्य का नाम गौरवान्वित किया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि- एम.डी. ठाकुर (उपाध्यक्ष, अनुसूचित जनजाति आयोग, छत्तीसगढ़ शासन), अध्यक्षता- राजमाता श्रीमती फुलवा देवी कांगे (राष्ट्रीय अध्यक्ष, कंगला मांझी संस्था, नई दिल्ली), अति विशिष्ट अतिथि- मधुसूदन यादव (महापौर), डॉ. परदेशीराम वर्मा (वरिष्ठ साहित्यकार एवं अध्यक्ष, अगासदिया भिलाई), संजय बैस (पूर्व जनपद सदस्य, डौंडी), कुंभदेव कांगे (उपाध्यक्ष, कंगला मांझी संस्था), आर. एस. उइके (महासचिव, अखिल भारतीय दंतेवाड़िन समाज समिति, नई दिल्ली), आयोजक समिति ने समस्त मीडिया प्रतिनिधियों, प्रबुद्धजनों एवं नागरिक बंधुओं से इस गरिमामयी सांस्कृतिक आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने की अपील की है।

रानीसागर तालाब में 20 अगस्त को मॉक ड्रिल का आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा राज्य में आपदा को दृष्टिगत रखते हुए 20 अगस्त 2026 को राजनांदगांव शहर के रानीसागर तालाब में काल्पनिक अभ्यास कार्यक्रम (मॉक ड्रिल) का आयोजन किया गया है। मॉक ड्रिल में आपदा के समय होने वाले कार्यों का अभ्यास कराया जाएगा। आयोजन के संचालन के डिप्टी कलेक्टर श्रीकांत कोराम को जिले के लिए इंसिडेंट कमांडर, सभी अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को अनुभाग के लिए इंसिडेंट कमांडर, सभी तहसीलदारों को तहसील के लिए इंसिडेंट कमांकर नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही विभिन्न विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दायित्व सौंपा गया है।

श्रीमती प्रमिला बैस का निधन

डोंगरगांव (दावा)। नगर के प्रतिष्ठित बैस परिवार की वयोवृद्ध माताजी श्रीमती प्रमिला बैस पति स्व. श्री मनोहर सिंह बैस का शनिवार सुबह निधन हो गया। वे लगभग 92 वर्ष की थीं तथा कुछ समय से अस्वस्थ थीं। उनका अंतिम संस्कार रविवार 9 अगस्त को स्थानीय मुक्तिधाम में किया जायेगा, उनकी अंतिम यात्रा स्थानीय सिनेमा लाईन स्थित निवास से सुबह 10 बजे मुक्तिधाम के लिए निकलेगी। वे गायत्री परिवार से जुड़े अशोक सिंह बैस सहित शिक्षक सरोज बैस, महेश बैस, राजेश तथा चंद्रेश बैस की माता थीं। वे अपने पीछे पांच पुत्रों व दो पुत्रियां का भरापूरा परिवार छोड़ गईं।

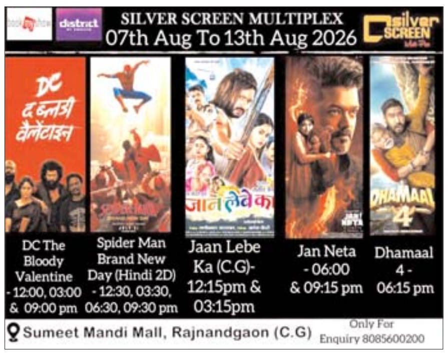

दिग्विजय स्टेडियम में आज से पांच दिवसीय जूनियर रैंकिंग बेडमिंटन टूर्नामेंट का आगाज

○ ढ़ाई सौ से अधिक खिलाड़ी लेंगे भाग, विजेता खिलाड़ियों पर होगी पुरस्कारों की बौछार

राजनांदगांव (दावा)। शहर के दिग्विजय स्टेडियम में आज से राज्य स्तरीय,25 वीं जूनियर रैंकिंग बेडमिंटन टूर्नामेंट होने जा रहा है। इस राज्य स्तरीय टूर्नामेंट आयोजन में प्रदेश भर के बैडमिंटन खिलाड़ी भाग लेंगे। इस बैडमिंटन स्पर्धा में रैंकिंग के आधार पर राज्य स्तरीय खेलने वाले खिलाड़ी को मौका मिलेगा।

इस संबंध में प्रेस वार्ता आयोजित कर आयोजन समिति के अध्यक्ष सूर्या ठाकुर, सचिव शिरीष जैन, राजीव नायडू, नीतिन भाटी ने बताया कि इस टुर्नामेंट में 250 से ज्यादा बैडमिंटन खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। आज रविवार को दोपहर 2 बजे आयोजित टुर्नामेंट के उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमनसिंह जी होंगे। वहीं विशेष अतिथि के रुप में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री व खेल मंत्री अरुण साव, महापौर मधुसूदन यादव, विक्रम सिसोदिया, रमेश पटेल, समाजसेवी बहादुर अली व योगेश बागड़ी उपस्थित रहेंगे। प्रेस वार्ता में बताया गया है बेडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के लिए प्रवेश शुल्क रखा गया है।

बताया गया कि विभिन्न जिलों से युगल जोड़ी बनाने वाले खिलाड़ियों के नाम भेजने वाले जिलों के पास अनापत्ति प्रमाण पत्र होना चाहिए या एक ही जोड़ी के नाम दोनों जिलों से आने चाहिए, अन्यथा प्रविष्टि पर विचार नहीं किया जाएगा और प्रवेश शुल्क जब्त कर लिया जाएगा। क्वालीफाइंग और मेन ड्रॉ में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के लिए प्रवेश शुल्क निम्नानुसार होगा।सभी श्रेणियों के एकल स्पर्धाओं के लिए 800रु., सभी श्रेणियों के युगल स्पर्धाओं के लिए रु. 1500 आयोजनकर्ता खिलाड़ियों से प्रवेश शुल्क वसूलने के लिए जिम्मेदार होंगे। टूर्नामेंट का पंजीकरण शुल्क- 550 रु. प्रति खिलाड़ी है, जिसका भुगतान 222.ष्द्बड्ड.ष्य.द्बठ्ठ के माध्यम से ऑनलाइन करना होगा। यह पंजीकरण शुल्क सभी खिलाड़ियों के लिए वर्ष में एक बार अनिवार्य है। आवेदन भेजने से पहले, खिलाड़ियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी सीजीबी प्लेयर आईडी सीजीबी वेबसाइट पोर्टल पर सक्रिय हो।

प्रतियोगिता का तरीका

मुख्य और क्वालीफाइंग ड्रॉ के सभी मैच रैली पॉइंट सिस्टम पर 15 अंकों के तीन (03) गेमों में से सर्वश्रेष्ठ के आधार पर खेले जाएंगे, जिसमें 21 अंकों का विस्तार होगा। बीडब्ल्यूएफ/बीएआई प्रतियोगिता विनियम और सामान्य प्रतियोगिता विनियम लागू होंगे। खिलाड़ियों को प्रतियोगिता के सामान्य नियमों का पालन करना होगा। मुख्य ड्रॉ के दूसरे दौर से आगे किसी भी खिलाड़ी द्वारा कपड़ों से संबंधित नियमों का उल्लंघन करने पर 1000 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। पीला कार्ड 500 रुपये, लाल कार्ड 1000 रुपये, काला कार्ड दुर्व्यवहार के लिए अयोग्यता और आगे की अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए जारी किया जाएगा।

लोकेश कावड़िया ने विशेष विद्यालय 'सामर्थ्य' का किया निरीक्षण, बच्चों की बौद्धिक क्षमता को सराहा

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ राज्य दिव्यांगजन वित्त एवं विकास निगम के अध्यक्ष लोकेश कावड़िया ने अपने राजनांदगांव प्रवास के दौरान नगर में संचालित शासकीय बौद्धिक मंदता वाले बालक-बालिकाओं के विशेष विद्यालय 'सामर्थ्य' का अवलोकन किया। विद्यालय पहुंचने पर समाज कल्याण विभाग की उपसंचालक श्रीमती वैशाली मरडवार और संस्था के विशेष बच्चों ने पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका आत्मीय स्वागत किया।

निरीक्षण के दौरान लोकेश कावड़िया ने बच्चों की बौद्धिक क्षमता और विकास की प्रगति को परखा। उन्होंने शिक्षकों और उपसंचालक के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इन बच्चों के प्रति अभिभावक की तरह स्नेह व आचरण की आवश्यकता है और इन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना हम सभी का नैतिक दायित्व है। इसके साथ ही उन्होंने जिले में यूडीआईडी कार्ड निर्माण कार्य की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर समाजसेवी हेमंत तिवारी, महेंद्र सुराना, शिक्षिका श्रीमती सुभाषिनी कंपोला, महेंद्र सोनवानी, प्रभारी अधीक्षक बालकृष्ण बघेल, लेखापाल सुनील चुरेंद्र और श्रीमती प्रमिला ठाकुर उपस्थित रहे। कार्यक्रम की जानकारी अभिलाषा संस्था के प्रशासक दिलीप श्रीवास्तव ने दी।

कल बाबा महाकाल की भव्य भस्म आरती और दर्शन

राजनांदगांव (दावा)। महकाल भक्तों के लिए दर्शन और भक्ति का सुनहरा अवसर है। 10 अगस्त 2026 (सोमवार) को होने वाली बाबा महाकाल की भव्य आरती और दर्शन के लिए है। यह उत्सव महाकाल मंदिर सिंघौला अनुसार कार्यक्रम की विस्तृत समय-सारणी इस प्रकार है। भव्य आरती का समय (सुबह) भस्म आरती सुबह 2:30 बजे से शुरू होगी। श्रृंगार आरती सुबह 4:30 बजे से शुरू होगी। सभी भक्तों से अनुरोध किया गया है कि वे इस भव्य आरती में उपस्थित होकर बाबा महाकाल का आशीर्वाद प्राप्त करें। अतः आरती से दिव्य दर्शन एवं पुण्य लाभ प्राप्त करें। उक्त जानकारी महाकाल भक्त पवन डागा ने दी ।

एआई से स्मार्ट होगा छत्तीसगढ़ : रविंद्र रामटेके

साय सरकार ने एआई मिशन को दी मंजूरी, 500 करोड़ का प्रावधान

राजनांदगांव(दावा)। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के कार्यसमिति सदस्य रविंद्र रामटेके ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की ताकत के साथ सुशासन को नई दिशा देने की ओर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक में छत्तीसगढ़ राज्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मिशन को मंजूरी दी गई है। इस मिशन के लिए आगामी पांच वर्षों में 500 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। श्री रामटेके ने कहा कि यह मिशन छत्तीसगढ़ को तकनीक आधारित, तेज और स्मार्ट प्रशासन की दिशा में आगे ले जाने वाला महत्वपूर्ण कदम है। एआई के उपयोग से सरकारी सेवाओं को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने के साथ-साथ शिक्षा, प्रशासन, स्टार्टअप और डिजिटल सेवाओं के क्षेत्र में नए अवसर पैदा होंगे। उन्होंने बताया कि एआई मिशन के तहत अगले पांच वर्षों में 100 एआई डेटा लैब और 5 सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किए जाएंगे। इसके साथ ही 300 एआई स्टार्टअप्स को सहायता प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है। इससे प्रदेश में नवाचार और तकनीकी उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा तथा युवाओं को एआई आधारित नए रोजगार और व्यवसाय के अवसर उपलब्ध होंगे। श्री रामटेके ने कहा कि मिशन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू मानव संसाधन को एआई के लिए तैयार करना है। इसके तहत प्रदेश के 6 लाख विद्यार्थियों और 1.5 लाख शासकीय कर्मचारियों को एआई का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे विद्यार्थी भविष्य की तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार होंगे वहीं शासकीय कर्मचारी आधुनिक तकनीक का उपयोग कर सरकारी कामकाज को अधिक तेज और प्रभावी बना सकेंगे। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, प्रशासन और डिजिटल सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव का माध्यम बन रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा एआई मिशन को मंजूरी देना प्रदेश को भविष्य की तकनीक से जोड़ने की दिशा में बड़ा कदम है। श्री रामटेके ने कहा कि शिक्षा से प्रशासन तक, स्टार्टअप से डिजिटल सेवाओं तक एआई छत्तीसगढ़ के विकास की नई ताकत बनेगा। एआई आधारित तकनीकों के उपयोग से सरकारी योजनाओं की बेहतर निगरानी, सेवाओं की त्वरित उपलब्धता और प्रशासनिक कार्यों में दक्षता बढ़ाने में मदद मिलेगी। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और राज्य सरकार के इस निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ अब स्मार्ट गवर्नेंस के साथ डिजिटल विकास की नई रफ्तार की ओर बढ़ रहा है। एआई मिशन आने वाले वर्षों में प्रदेश के युवाओं, विद्यार्थियों, स्टार्टअप्स और सरकारी तंत्र के लिए नए अवसरों का द्वार खोलेगा।

नगर निगम द्वारा खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी यादव का नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित

○ कामनवेल्थ 2026 रजत पदक विजेता ज्ञानेश्वरी यादव को निगम से मिली 2 लाख रु. प्रोत्साहन एवं सम्मान राशि

○ डॉ. रमन सिंह के मुख्यमंत्रित्वकाल में जिले में बेहतर खेल सुविधाओं पर ध्यान केन्द्रित किया, जिसका सुखद परिणाम अब ज्ञानेश्वरी जैसी खेल प्रतिभाओं के रूप में हमें प्राप्त हो रहा है - महापौर

राजनांदगांव (दावा)। महापौर मधुसूदन यादव ने नगर निगम की ओर से एक आयोजन में अंतर्राष्ट्रीय पदक विजेता भारत्तोलन खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी को 2 लाख रू. का चेक प्रोत्साहन एवं सम्मान राशि के रूप में प्रदान करते हुए उज्जवल भविष्य के लिये शुभकामनाएँ दी । उन्होंने खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी की उपलब्धि को राजनांदगॉव जिला, छत्तीसगढ़ प्रदेश एवं देश के लाखों युवा खिलाड़ियों के लिये प्रेरणास्त्रोत बताया जो खेल के क्षेत्र में अपना भविष्य सॅवारने के लिये कठिन परिश्रम एवं संघर्ष कर रहे हैं। महापौर ने इस बात को रेखांकित किया कि राजनांदगॉव में डॉ0 रमन सिंह के मुख्यमंत्रित्वकाल में जिले के सर्वांगीण विकास के लिये कई क्रांतिकारी पहल की गई, जिसमें खेल एवं खिलाड़ियों के लिये बेहतर खेल सुविधाऍ एवं उत्कृष्ट अधोसंरचना उपलब्ध करावाने की दिशा में ध्यान केन्द्रित किया गया था, जिसके दूरगामी सुखद परिणाम अब प्राप्त होने लगे हैं और ज्ञानेश्वरी जैसी खेल प्रतिभाऍ अब हमें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित कर रहीं है।

उल्लेखनीय है कि स्कॉटलैंड के ग्लासगो शहर में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल 2026 के भारोत्तोलन स्पर्धा में भारत के लिए रजत पदक जीतकर राजनांदगॉव जिला, छत्तीसगढ़ प्रदेश और भारत देश का नाम संपूर्ण विश्व में रोशन करने वाली राजनांदगांव की माटी की बेटी ज्ञानेश्वरी यादव का नगर निगम की ओर से नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। यह आयोजन स्थानीय गौरवपथ स्थित ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया, जिसमें आयोजक मंडल की ओर से महापौर मधुसूदन की अगुवाई में निगम अध्यक्ष टोपेन्द्र (पारस) वर्मा, समस्त पार्षदगण, निगम कमिश्नर जी आर मरकाम एवं प्रशासनिक अमला मौजूद रहा। भारत्तोलन खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी यादव का सम्मान करने के लिये आयोजन में आईजी राजनांदगॉव रेन्ज अजय कुमार यादव, जिलाधीश राजनांदगॉव जितेन्द्र यादव, पुलिस अधिक्षक राजनांदगॉव अंकिता शर्मा सहित विभिन्न सामाजिक, नागरिक संगठनों, शिक्षण संस्थानों, व्यापारिक एवं औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने उपस्थित रहकर अंतर्राष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी यादव का सम्मान किया। आयोजनकर्ता नगर निगम राजनांदगॉव की ओर से महापौर सहित आई.जी., कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक से सभा को संबोधित करते हुए युवा भारत्तोलन खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी के उपलब्धियों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी एवं भविष्य में भी इसी तरह देश के लिये और कई पदक जीतकर देश का नाम रौशन करते रहने के लिये प्रेरित किया।

पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचाने सूर्य सभा का आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लाभ अधिक से अधिक परिवारों तक पहुंचाने के उद्देश्य से 6 से 8 अगस्त 2026 तक आयोजित सूर्य सभा के माध्यम से पद्मश्री फूलबासन यादव ने आधा दर्जन से अधिक गांवों में पहुंचकर ग्रामीणों को घरों की छत पर सोलर सिस्टम लगाने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा अपनाना बढ़ते बिजली खर्च से राहत पाने और परिवार को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का अच्छा माध्यम है। खेती-किसानी के व्यस्त समय के बावजूद बड़ी संख्या में ग्रामीण सूर्य सभा में पहुंचकर अभियान से जुड़ रहे हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा के प्रति बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है।

पद्मश्री फूलबासन यादव ने ग्रामीणों को बताया कि छत्तीसगढ़ में केंद्र एवं राज्य सरकार की सहायता को मिलाकर 1 किलोवाट पर ?45,000, 2 किलोवाट पर रु. 90,000 तथा 3 किलोवाट पर ?1,08,000 तक की सहायता उपलब्ध है। छत्तीसगढ़ सरकार के आधिकारिक प्रकाशन में भी इन संयुक्त सहायता राशियों का उल्लेख किया गया है।

उन्होंने कहा कि योजना का उद्देश्य अधिक से अधिक आवासीय परिवारों को रूफटॉप सोलर से जोड़ना है और यह योजना वित्त वर्ष 2026-27 के लक्ष्य के साथ संचालित हो रही है। केंद्र सरकार के अनुसार योजना का लक्ष्य एक करोड़ घरों में रूफटॉप सोलर पहुंचाना है।

उन्होंने ग्रामीणों से अपील की कि सोलर पैनल लगाने, आवेदन, दस्तावेज, तकनीकी प्रक्रिया या स्थापना में किसी भी प्रकार की परेशानी हो तो तत्काल संपर्क करें, ताकि समस्या का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जा सके और अधिक से अधिक परिवार इस अभियान से जुड़ सकें।

न्यायालय नायब तहसीलदार घुमका के न्यायालय में मामला क्रमांक: 202607094700029

विषयः- अ-6 मामले की श्रेणी : - राजस्व सनः-2025-2026,चारभांठा (प.ह.नं. 00010), पक्षकारों का विवरण आवेदक पक्षकार - एबीस एग्रोटेक प्राइवेट लिमिटेड, अनावेदक पक्षकार - एबीस पोल्ट्री प्रा. लि. डायरेक्टर बहादुर अली,

// ईश्तहार//

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि आवेदक 'एबीस एग्रोटेक प्राईवेट लिमिटेड', संचालक बहादुर अली आत्मज स्व. अब्दुल अजीज के अधिकृत अधिकारी द्वारा छ.ग. भू-राजस्व संहिता की धारा 109, 110 के अंतर्गत नामान्तरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया। आवेदन पत्र में ग्राम-चारभाठा, प.ह.नं.-10, रा.नि.मं. उपरवाह, तहसील- घुमका में स्थित भूमि खसरा (रकबा हे. में) क्रमशः 1045 (0.6560 हे.), 712/1 (0.2470 हे.), 708 (0.2390 हे.), 720 (1.0960 हे.), 733 (0.3440 हे.), 725 (0.3880 हे.), 715/1 (0.6230 हे.), 744/4 (0.4770 हे.), 1016 (0.4860 हे.), 1046/1 (1.5020 हे.), 705/2 (1.0230 हे.), 711 (0.2550 हे.), 739 (1.5130 है.), 737 (0.1460 हे.), 735 (0.3160 हे.), 744/1 (0.1420 हे.), 744/5 (0.4770 हे.), 1044/2 (0.4050 हे.), 710 (0.3650 हे.), 712/2 (0.2430 हे.), 719 (2.4770 हे.), 730 (0.0850 हे.), 738 (0.1490 हे.), 741 (0.5260 हे.), 744/2 (0.1420 हे.), 744/6 (0.4770 हे.), 1015/2 (0.8490 हे.), 657/12 (0.2430 हे.), 657/19 (0.1250 हे.), 709 (0.2020 हे.) ,729 (0.0850 हे.), 736 (0.1460 हे.), 731 (0.9750 हे.), 716 (0.5140 हे.), 744/3 (0.1420 हे.), सहित कुल 35 खसरा नंबर, कुल रकबा 18.08 हेक्टेयर के राजस्व अभिलेखों में वर्तमान दर्ज नाम 'एबीस पोल्ट्री प्राईवेट लिमिटेड' के स्थान पर आवेदक 'एबीस एग्रोटेक प्राईवेट लिमिटेड' का नाम दर्ज करने का निवेदन किया गया है। आवेदन में लेख किया है कि माननीय नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (NCLT), कटक बेंच के आदेश दिनांक **20/08/2020** (प्रकरण क्रमांक C.P. (CAA) No.13/CTB/2020) के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, जिसके तहत विभिन्न कंपनियों का संविलियन (Merger) एबीस एग्रोटेक प्राईवेट लिमिटेड में किया गया है जिसके तहत 'एबीस पोल्ट्री प्राईवेट लिमिटेड' का भी कंपनी में निहित हो गई है। प्रकरण नामांतरण के तहत प्राप्त होने के कारण निराकरण हेतु प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक **10/08/2026** को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय नायब तहसीलदार घुमका पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/ संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं/ अधिवक्ता/ आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक **28/07/2026** को जारी किया जाता है।

Abdul Vasim Siddiqui
नायब तहसीलदार
घुमका, जिला राजनादगांव

न्यायालय नायब तहसीलदार घुमका के न्यायालय में मामला क्रमांक: 202607094700030

विषयः- अ-6 मामले की श्रेणीः- राजस्व सत्र :- 2025-2026, देवादा (पहनं. 00012), पक्षकारों का विवरण -आवेदक पक्षकार एबीस फूड्स एण्ड प्रोटीन्स प्राइवेट लिमिटेड, अनावेदक पक्षकार - इंडियन एग्रो एंड फूड इंडस्ट्रीज लिमिटेड मैनेजिंग डारेक्टर बहादुर अली,

// ईश्तहार//

एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि आवेदक एबीस फूड्स एण्ड प्रोटीन्स प्राईवेट लिमिटेड (पूर्ववर्ती नाम- एबीस एक्सपोर्ट्स (इंडिया) प्राईवेट लिमिटेड), प्रबंध संचालक बहादुर अली आत्मज स्व. अब्दुल अजीज, निवासी-बलदेवबाग, राजनांदगाँव (छ.ग.) के अधिकृत अधिकारी द्वारा छ.ग. भू-राजस्व संहिता की धारा 109, 110 के अंतर्गत नामान्तरण हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। आवेदक द्वारा ग्राम-देवादा, प.ह.नं. 12, रा.नि.मं. उपरवाह, तहसील घुमका, जिला-राजनांदगांव, (छ.ग.) स्थित भूमि खसरा नंबर (रकबा हे. में) क्रमशः 619 (0.7210 हे.), 622/1 (0.1880 हे.), 628/2 (0.2220 हे.), 629 (0.3480 हे.), 623 (0.1830 हे.), 626 (0.2020 हे.), 627 (0.1620 हे.), 631 (0.3640 हे.), 620 (0.3720 हे.), 622/2 (0.0650 हे.), 630/1 (0.3640 हे.), 625/2 (0.2430 हे.), 621 (0.8170 हे.), 624 (0.1700 हे.), 630/2 (0.3620 हे.), 630/4 (0.3650 हे.) कुल खसरा **16**, कुल रकबा **5.1480** हे. राजस्व अभिलेखों में दर्ज वर्तमान नाम 'इंडियन एग्रो एण्ड फूड इंडस्ट्रीज लिमिटेड' के स्थान पर, माननीय नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (NCLT) के आदेश दिनांक **26/07/2021** एवं निगमन प्रमाण पत्र दिनांक **20/08/2025** के आधार पर आवेदक कंपनी का नाम दर्ज करने का निवेदन किया गया है। प्रकरण निराकरण हेतु अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक **10/08/2026** को समय सुबह **11 बजे** स्थान न्यायालय नायब तहसीलदार घुमका पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/ संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता/आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक **28/07/2026** को जारी किया जाता है ।

Abdul Vasim Siddiqui
नायब तहसीलदार
घुमका, जिला राजनादगांव

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि मैं गोवर्धन लाल तेली (Govardhan Lal Teli) पिता किर्तन लाल साहू निवासी ग्राम बिटाल पोस्ट आमाटोला, जिला मोहला मानपुर अ.चौकी, (छ.ग.) का निवासी हूँ।

यह शपथ करता हूं कि मेरा सही और वास्तविक नाम गोवर्धन लाल साहू (Govardhan Lal Sahu) है, जो मेरे आधार कार्ड व अन्य सभी दस्तावेजों में दर्ज है। यह कि मेरे 10 वीं कक्षा की अंकसूची में लिपिकीय त्रुटि के कारण मेरा नाम गोवर्धन लाल तेली (Govardhan Lal Teli) दर्ज हो गया है। अतः आज से मुझे शासकीय /अर्द्धशासकीय व अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम आधार कार्ड के अनुसार गोवर्धन लाल साहू (Govardhan Lal Sahu) के नाम से जाना व पहचाना जावे।

Govardhan Lal Sahu
s/o- Kirtan Lal Sahu,
H No. 09 Bital, Amatola
Dist. Mohla Manpur
Amabagarh Chauki, (CG)
PIN- 491668

न्यायालय तहसीलदार अं.चौकी जिला-मोहला मानपुर अं.चौकी (छ.ग.)

// ईश्तहार //

एतत द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता हैं आवेदक सलामुद्दीन अंसारी पिता स्व. श्री अमरूद्दीन अंसारी निवासी ग्राम अं.चौकी, तहसील अं. चौकी, जिला-मोहला मानपुर अं.चौकी द्वारा ग्राम अं.चौकी प.ह.नं. 18 में परिवर्तित भूमि पर दो मंजिला मकान स्थित है। जिसका खसरा नं.112/31 रकबा 0.020 एकड़ भूमि को बैंक कर्ज अदायगी एवं अन्य कार्य हेतु रूपयों की आवश्यकता होने पर विक्रय करने की अनुमति प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति को दावा/आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 21/08/2026 तक स्वयं या अभिभावक के माध्यम से अपना दावा/आपत्ति पेश कर सकते है समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा। आज मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया।

जारी दिनांक 07.08.2026,
सुनवाई दिनांक 21.08.2026

तहसीलदार
अं.चौकी

न्यायालय तहसीलदार, राजनांदगाँव, जिला-राजनांदगाँव

// ईश्तहार //

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक चन्द्रशेखर लश्करे पिता स्व. विठोबा राघोबा जी लश्करे निवासी आरा मशीन रोड, कैलाश नगर, वार्ड नं. 27 शहर, तहसील व जिला राजनांदगांव (छ.ग.) द्वारा आवेदन प्रस्तुत कर ग्राम कन्हारपुरी प.ह.नं. 43 तहसील व जिला राजनांदगांव स्थित भूमि खसरा नं. 135/9 रकबा 0.008 हे. भूमि को ऑनलाईन किए जाने का निवेदन किया गया है।

उक्ताशय के संबंध में जिस किसी व्यक्ति/ संस्था को किसी भी प्रकार की कोई दावा आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो वे नियत पेशी तारीख 17/08/2026 के पूर्व स्वयं अथवा अपने अभिभावक के माध्यम से न्यायालयीन समय तक लिखित में प्रस्तुत कर सकते है, बाद प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

अतः यह ईश्तहार आज दिनाँक 06/08/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

जारी दिनांक : - 06/08/2026
पेशी दिनांक - 17/08/2026

तहसीलदार
राजनांदगांव (छ.ग.)

शुभांक

अनुमानित

बी. के.	
349-6	188-7

चेतावनीः-इस पत्र में प्रकाशित सर्वत्र शुभ राशियां ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र के आधार पर धारणा मात्र है। इसका सट्टे आदि से कोई संबंध नहीं है, दुरूपयोग न करें। दुरूपयोग करने पर प्रकाशक की कोई जवाबदारी नहीं होगी। -सम्पादक

सावन के प्रथम प्रदोष पर संस्कारधानी में कल निकलेगी बाबा महाकाल की भव्य पालकी यात्रा

कल बसंतपुर क्लब चौक से होगा शुभारंभ, शहर के प्रमुख मार्गों से निकलेगी पालकी, डॉ. रमन सिंह करेंगे बाबा महाकाल की अगवानी

राजनांदगांव (दावा)। सावन मास के पावन अवसर पर संस्कारधानी राजनांदगांव एक बार फिर शिवभक्ति के रंग में रंगने जा रही है। सावन के प्रथम प्रदोष एवं दूसरे सोमवार, 10 अगस्त 2026 को श्री महाकाल सेना के तत्वावधान में बाबा चंद्रमौलेश्वर महाकाल की भव्य पालकी यात्रा का आयोजन किया जाएगा। पालकी यात्रा को लेकर शिवभक्तों और नगरवासियों में विशेष उत्साह का वातावरण है। आयोजकों द्वारा यात्रा को भव्य एवं व्यवस्थित स्वरूप देने की तैयारियां की जा रही हैं।

बाबा महाकाल की यह पालकी यात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति, शिवभक्ति, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक सद्भाव और एकता का संदेश देने वाली यात्रा होगी। पालकी में बाबा चंद्रमौलेश्वर महाकाल के दिव्य स्वरूप के दर्शन के साथ श्रद्धालुओं को भक्ति और आध्यात्मिकता का अनुभव होगा। ढोल-नगाड़ों, जयघोष और भक्तिमय वातावरण के बीच नगर भ्रमण करने वाली इस पालकी यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह सहित अनेक गणमान्य होंगे शामिल

पालकी यात्रा में छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, पर्यटन मंडल अध्यक्ष नीलू शर्मा, विधायक प्रतिनिधि संतोष अग्रवाल, भाजपा अध्यक्ष कोमल सिंह राजपूत, मंडल अध्यक्ष प्रशांत गुप्ता, समाजसेवी पवन डागा, राकेश यादव सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक शामिल होंगे। इसके अलावा पार्षद शेखर साहू, भरत साहू,

चिंटू बग्गा, आवतराम तेजवानी, राजा माखीजा, संजय तेजवानी, अनिल तेजवानी, विनोद लूल्ला सहित सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े अनेक लोग पालकी यात्रा में सहभागिता करते हुए बाबा महाकाल की अगवानी करेंगे। जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य नागरिकों की सहभागिता से आयोजन को और भव्यता मिलने की उम्मीद है।

बसंतपुर क्लब चौक से शुरू होकर लालबाग में होगा समापन

श्री महाकाल सेना द्वारा जारी यात्रा की रूपरेखा के अनुसार बाबा महाकाल की पालकी यात्रा बसंतपुर क्लब चौक से प्रारंभ होगी। इसके बाद पालकी महमाया चौक, गांधी नगर, महेश नगर, ग्रीन हाइट्स, खोमचा ग्रुप, कमला कॉलेज चौक, फुर्सत के पल, प्रभात नगर स्थित जगन्नाथ मंदिर होते हुए हेमू कल्याणी चौक, लालबागेश्वर धाम लालबाग पहुंचेगी। नगर के विभिन्न मार्गों पर श्रद्धालु बाबा महाकाल की पालकी का दर्शन एवं स्वागत करेंगे। जगह-जगह पुष्पवर्षा, पूजन एवं स्वागत की तैयारियां भी की जा रही हैं। यात्रा के दौरान हर-हर महादेव और जय चंद्रमौलेश्वर महाकाल के जयघोष से पूरा शहर शिवमय होने की संभावना है।

ढोल-नगाड़ों और राष्ट्रभक्ति के साथ निकलेगी पालकी

पालकी यात्रा में ढोल-नगाड़े, भक्ति संगीत और शिवभक्ति के जयघोष आकर्षण का केंद्र रहेंगे। आयोजन में राष्ट्रभक्ति को भी विशेष स्थान दिया गया है। बड़ी संख्या में राष्ट्रीय ध्वजों के साथ श्रद्धालु यात्रा में शामिल होकर धर्म और राष्ट्र के प्रति सम्मान का संदेश देंगे।

सावन में महाकाल की भक्ति का विशेष महत्व

सावन मास भगवान शिव की आराधना का विशेष पर्व माना जाता है। सावन के प्रत्येक सोमवार और प्रदोष के अवसर पर शिवालयों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। ऐसे पावन अवसर पर बाबा चंद्रमौलेश्वर महाकाल की पालकी का नगर भ्रमण श्रद्धालुओं के लिए विशेष आध्यात्मिक अवसर होगा। श्रद्धालुओं का मानना है कि बाबा महाकाल के दर्शन एवं पूजन से मन को शांति मिलती है तथा भगवान शिव की कृपा से परिवार में सुख, शांति और समृद्धि आती है। इसी आस्था के चलते पालकी यात्रा में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में शिवभक्त उत्साहपूर्वक शामिल होते हैं।

श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील

श्री महाकाल सेना ने नगर के समस्त शिवभक्तों, धर्मप्रेमी नागरिकों एवं युवाओं से अपील की है कि वे 10 अगस्त सोमवार को परिवार सहित पालकी यात्रा में शामिल हों। आयोजकों ने कहा कि बाबा महाकाल की पालकी यात्रा संस्कारधानी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान को और मजबूत करने वाला आयोजन है। आयोजकों ने श्रद्धालुओं से यात्रा के दौरान अनुशासन बनाए रखने, मार्ग में व्यवस्था बनाए रखने तथा पालकी यात्रा को शांतिपूर्ण एवं भक्तिमय वातावरण में संपन्न कराने में सहयोग करने का आग्रह किया है। बाबा चंद्रमौलेश्वर महाकाल की भव्य पालकी यात्रा को लेकर शहर में उत्साह का माहौल है। 10 अगस्त को बसंतपुर क्लब चौक से निकलने वाली यह यात्रा जब शहर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरेगी, तब संस्कारधानी हर-हर महादेव के जयघोष से गूंज उठेगी।

विस अध्यक्ष डॉ. रमन दो दिवसीय जिले के प्रवास पर

राजनांदगांव (दावा)। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह 9 एवं 10 अगस्त 2026 को राजनांदगांव जिले के प्रवास पर रहेंगे। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह 9 अगस्त को सुबह 11 बजे स्पीकर हाऊस शंकर नगर रायपुर से कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 12.30 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव पहुंचेंगे एवं समय आरक्षित रहेगा। विधानसभा अध्यक्ष दोपहर 12.50 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव से कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 1 बजे कृष्ण कुंज जज कॉलोनी के पास रामकृष्ण नगर वार्ड क्रमांक 22 राजनांदगांव पहुंचकर 2000 सीटर ऑडिटोरियम निर्माण के भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल होंगे। विधानसभा अध्यक्ष दोपहर 2.15 बजे कृष्ण कुंज रामकृष्ण नगर से कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 2.25 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव पहुंचेंगे एवं समय आरक्षित रहेगा। विधानसभा अध्यक्ष दोपहर 3.10 बजे दिग्विजय स्टेडियम राजनांदगांव पहुंचकर बैडमिंटन प्रतियोगिता में शामिल होंगे। विधानसभा अध्यक्ष अपरान्ह 3.40 बजे दिग्विजय स्टेडियम से कार द्वारा प्रस्थान कर अपरान्ह 3.50 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव पहुंचेंगे एवं समय आरक्षित रहेगा।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह 10 अगस्त को सुबह 7 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव से कार द्वारा प्रस्थान कर सुबह 7.10 बजे नंदई चौक राजनांदगांव पहुंचकर कांवड़ यात्रा के स्वागत कार्यक्रम में शामिल होंगे। विधानसभा अध्यक्ष सुबह 8 बजे नंदई चौक से कार द्वारा प्रस्थान कर सुबह 8.10 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव पहुंचेंगे एवं समय आरक्षित रहेगा। विधानसभा अध्यक्ष दोपहर 1.50 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव से कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 2 बजे हनुमान मंदिर के पास बसंतपुर क्लब चौक पहुंचेंगे एवं महाकाल यात्रा में शामिल होंगे। विधानसभा अध्यक्ष दोपहर 2.50 बजे बसंतपुर क्लब चौक से कार द्वारा प्रस्थान कर अपरान्ह 3 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव पहुंचेंगे एवं समय आरक्षित रहेगा। विधानसभा अध्यक्ष अपरान्ह 5 बजे स्पीकर हाऊस राजनांदगांव से कार द्वारा स्पीकर हाऊस शंकर नगर रायपुर के लिए प्रस्थान करेंगे।

उपमुख्यमंत्री अरुण साव आज राजनांदगांव प्रवास पर

राजनांदगांव (दावा)। उपमुख्यमंत्री अरूण साव 9 अगस्त 2026 को राजनांदगांव प्रवास पर रहेंगे। उपमुख्यमंत्री अरूण साव 9 अगस्त को सुबह 11.15 बजे एम-6 सेक्टर 24 अटल नगर नवा रायपुर से कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 1 बजे कृष्ण कुंज जज कालोनी के पास रामकृष्ण वार्ड क्रमांक 22 राजनांदगांव पहुंचकर 2000 सीटर ऑडिटोरियम निर्माण एवं विभिन्न विकास कार्यों के भूमि पूजन कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव दोपहर 2.15 बजे रामकृष्ण वार्ड क्रमांक 22 से कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 2.25 बजे विधानसभा अध्यक्ष निवास पहुंचेंगे एवं समय आरक्षित रहेगा। उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव अपरान्ह 3 बजे विधानसभा अध्यक्ष निवास से कार द्वारा प्रस्थान कर अपरान्ह 3.10 बजे दिग्विजय स्टेडियम पहुंचकर 25वां छत्तीसगढ़ राज्य रैंकिंग बैडमिंटन प्रतियोगिता 2026-27 के शुभारंभ कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे। उप मुख्यमंत्री अरूण साव अपरान्ह 3.40 बजे दिग्विजय स्टेडियम से कार द्वारा माता सुन्दरी पब्लिक स्कूल पंडरी रायपुर के लिए प्रस्थान करेंगे।

जिला टेबल टेनिस संघ के सुरेन्द्र बग्गा बने अध्यक्ष, जिले में टेबल टेनिस को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाने का संकल्प

राजनांदगांव(दावा)। जिला टेबल टेनिस संघ राजनांदगांव की महत्वपूर्ण बैठक संघ के अध्यक्ष सुरेंद्र बग्गा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में जिले में टेबल टेनिस खेल के विकास, खिलाड़ियों को बेहतर अवसर उपलब्ध कराने तथा खेल प्रतिभाओं को जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में संघ की नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए खेल गतिविधियों को व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से संचालित करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में सर्वसम्मति से सुरेंद्र बग्गा को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। वहीं उपाध्यक्ष के रूप में हर्ष चितलांग्या, श्रीमती ममता मिश्रा एवं राजेश साहू, सचिव के रूप में अरुण डुलानी सहित अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं। नई कार्यकारिणी का उद्देश्य जिले में टेबल टेनिस की गतिविधियों को और अधिक सक्रिय करना तथा खिलाड़ियों को नियमित प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से बेहतर मंच उपलब्ध कराना है।

बैठक में जिला स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता आयोजित करने का प्रस्ताव भी रखा गया। प्रतियोगिता के माध्यम से जिले के प्रतिभावान खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा

प्रदर्शित करने तथा आगे राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में राजनांदगांव का प्रतिनिधित्व करने का अवसर उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया। इसके साथ ही राजनांदगांव में राज्य स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता आयोजित करने की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई। इसके लिए छत्तीसगढ़ राज्य टेबल टेनिस संघ से आवश्यक अनुमति एवं समन्वय, प्रतियोगिता स्थल, खिलाड़ियों के आवास एवं भोजन, खेल सामग्री, तकनीकी अधिकारियों, पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को लेकर प्रारंभिक विचार-विमर्श किया गया।

बैठक में यह भी जानकारी दी गई कि जिला टेबल टेनिस संघ का पूर्व में फर्म एवं सोसायटी के अंतर्गत पंजीयन कराया गया था, जिसका नवीनीकरण लंबित है। संघ के पूर्व पंजीयन की वर्तमान स्थिति की जानकारी प्राप्त कर नियमानुसार नवीनीकरण एवं नियमितीकरण की आवश्यक कार्यवाही किए जाने पर भी सहमति बनी।

संघ के अध्यक्ष सुरेंद्र बग्गा ने कहा कि जिले में टेबल टेनिस को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों एवं खेलप्रेमियों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। संघ का मुख्य उद्देश्य जिले के खिलाड़ियों को बेहतर मंच उपलब्ध कराना तथा उनकी प्रतिभा को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाना है। इसके लिए नियमित प्रतियोगिताओं, प्रशिक्षण गतिविधियों और आवश्यक खेल सुविधाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि राजनांदगांव में टेबल टेनिस की प्रतिभाओं की कमी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इन खिलाड़ियों को सही मार्गदर्शन, बेहतर प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा दिखाने के पर्याप्त अवसर मिलें। नई कार्यकारिणी इसी दिशा में योजनाबद्ध तरीके से कार्य करेगी। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने भी जिला टेबल टेनिस के विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्य करने तथा आगामी प्रतियोगिताओं को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग देने का संकल्प लिया। साथ ही जिले के अधिक से अधिक बच्चों एवं युवाओं को टेबल टेनिस से जोड़ने और खेल के प्रति रुचि बढ़ाने के प्रयास करने पर सहमति बनी।

'अनुशासन ही आजादी है'- दीक्षारंभ समारोह में बोले कलेक्टर, नशा मुक्ति पोस्टर का किया अनावरण

'सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता', दीक्षारंभ समारोह में बोले कलेक्टर जितेन्द्र यादव

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर जितेन्द्र यादव शासकीय कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव के दीक्षारंभ समारोह में शामिल हुए। कलेक्टर ने अपने उद्बोधन में नवप्रवेशित छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता। कठोर

परिश्रम के बिना किसी भी महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल नहीं किया जा सकता। उन्होंने छात्राओं को अपना लक्ष्य निर्धारित करने और प्रतिदिन उस दिशा में कुछ न कुछ प्रगति अनिवार्य रूप से करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि अनुशासन ही आजादी है और आजादी ही बंधन है। अनुशासन को आत्मसात करते से आजादी की अनुभूति होती है। इस दौरान कलेक्टर ने छात्राओं को तिलक लगाकर महाविद्यालय में स्वागत किया। कलेक्टर ने नशा मुक्ति अभियान अंतर्गत महाविद्यालय की ओर से देश को नशा मुक्त करने की दिशा में अपने योगदान देने का प्रयास के लिए शुभकामना देते हुए कहा कि सभी छात्राओं को मर्यादित रूप से आगे बढ़ते हुए सफलता हासिल करनी चाहिए। दीक्षारंभ समारोह में नवप्रवेशित छात्राओं को महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के प्राध्यापकों द्वारा विभाग तथा महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। आयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी श्रीमती रामकुमारी धुर्वा, क्रीड़ा अधिकारी डॉ. नीता एस नायर ने विशेष सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के आईक्यूएसी के समन्वयक एवं मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बसंत कुमार सोनबेर द्वारा किया गया। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि, गणमान्य जन सहित महाविद्यालय के प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्राएं उपस्थित थी।

प्राचार्य डॉ. अंजली अवधिया ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी के लिए महाविद्यालयीन जीवन में प्रवेश करने का समय एक महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। सभी को अपने जीवन के अनेक निर्णय स्वयं लेने होते है। महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। उन्होंने आशा करते हुए कहा कि महाविद्यालय की छात्राएं भी अपने माता-पिता के साथ महाविद्यालय का गौरव बढ़ाएंगे।

महाविद्यालय के जनभागीदारी समिति की अध्यक्ष सुश्री मणीभास्कर गुप्ता ने छात्राओं को महिलाओं की भूमिका पर आधारित पोस्टर का अनवारण किया।

शहर में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ पुलिस ने कमर कसी

1035 वाहन चालकों पर की कार्रवाई, वसूले 5,26,300 का जुर्माना

राजनांदगांव (दावा)। पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर के मार्गदर्शन एवं यातायात प्रभारी निरीक्षक नवरत्न कश्यप के नेतृत्व में आगामी त्योहारी सीजन को दृष्टिगत रखते हुए शहर में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सघन अभियान चलाकर प्रभावी कार्यवाही की गई।

इस अभियान के तहत यातायात पुलिस द्वारा शहर के नया बस स्टैंड चौक, महावीर चौक, खैरागढ़ रोड, भगत सिंह चौक,पुराना रेस्ट हाउस, रेल्वे स्टेशन रोड, पोस्ट ऑफिस चौक, पुराना बस स्टैंड, राम दरबार, अग्रवाल ट्रांसपोर्ट, गंज चौक कुआँ चौक, नंदई चौक, महामाया चौंक, तिरंगा चौक, भारत माता चौक, कामठी लाइन, सिनेमा लाइन, जूनी हटरी, मानव मंदिर चौक, फौवारा चौक, गांधी चौक, दुर्गा

चौक, सदर लाइन आदि के अलावा स्टेडियम रोड में फुर्सत के पल चौक, कविता कॉम्पलेक्स चौक, अम्बेडकर चौंक, आर.के. नगर जाने वाली सर्विस रोड एवं मोतीपुर अंडरब्रिज रोड सहित शहर के प्रमुख एवं व्यस्त मार्गों पर यातायात नियमों के उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई की गई।

दोषी वाहन चालकों से वसूले गए जुर्माना

शहर यातायात प्रभारी नवरतन कश्यप ने बताया कि इस अभियान के तहत नो-पार्किंग क्षेत्र में वाहन खड़ा करने वाले 556 वाहनों के विरुद्ध कार्रवाई की गई। वहीं शराब सेवन कर वाहन चलाने वाले 18 वाहन चालकों के विरुद्ध तथा बिना वैध लाइसेंस ई-रिक्शा चलाने वाले 29 वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई की गई।

इसी तरह प्रतिबंधित क्षेत्र में वाहन प्रवेश कराने वाले 03 वाहनों पर कार्रवाई करते हुए रु. 9,000 का जुर्माना वसूल किया गया, वहीं यातायात के अन्य नियमों का उल्लंघन करने वाले 429 वाहनों के विरुद्ध भी कार्रवाई की गई। इस प्रकार यातायात पुलिस द्वारा कुल 1035 वाहनों पर कार्रवाई करते हुए रु. 5,26,300/- का जुर्माना वसूल किया गया।

पुलिस की आम नागरिकों एवं व्यापारियों से अपील

यातायात पुलिस ने आगामी त्योहारी सीजन के दौरान बाजार एवं प्रमुख मार्गों पर यातायात का दबाव बढ़ने की संभावना को देखते हुए यातायात पुलिस द्वारा आम नागरिकों से अपील की गई है कि वे अपने वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थल पर ही पार्क करें तथा नो-पार्किंग क्षेत्र में वाहन खड़ा कर यातायात व्यवस्था बाधित न करें। साथ ही सभी व्यापारियों से अपील है कि वे अपने प्रतिष्ठानों में आने वाले ग्राहकों के वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थल पर ही पार्क करवाएं तथा सड़क पर अनावश्यक रूप से वाहन खड़ा न होने दें। आम नागरिक एवं व्यापारीगण यातायात पुलिस का सहयोग करते हुए यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध आगे भी निरंतर प्रभावी कार्रवाई जारी रहेगी।

गुजराती स्कूल के दो खिलाड़ी संभाग स्तर पर चयनित, कल भिलाई में दिखाएंगे दमखम

राजनांदगांव (दावा)। जिला स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता 2026-27 के अंतर्गत कस्तूरबा स्कूल राजनांदगांव में आयोजित कराटे प्रतियोगिता में गुजराती राष्ट्रीय उच्चतर माध्यमिक शाला के दो होनहार विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संभाग स्तर पर अपनी जगह बनाई है। प्रतियोगिता में कक्षा दसवीं के छात्र रियांस सोनी (अंडर-19) और कक्षा आठवीं के छात्र नवाज खान (अंडर-17) का चयन हुआ है। दोनों खिलाड़ी 10 अगस्त को भिलाई में आयोजित होने वाली संभाग स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में राजनांदगांव जिले और अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व करेंगे।

खिलाड़ियों के चयन पर विद्यालय परिवार में खुशी की लहर है। संस्था की प्राचार्या श्रीमती सुषमा शुक्ला ने कहा कि यह उपलब्धि पूरे विद्यालय के लिए गौरव का विषय है। अनुशासन, समर्पण और निरंतर अभ्यास ही सफलता की कुंजी है। उपप्राचार्या श्रीमती अर्पणा श्रीवास्तव ने कहा कि खेल से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। कराटे प्रशिक्षक सुधा साहू एवं अनुसुईया साहू ने दोनों खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत की सराहना करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रबंधकारिणी संस्था के अध्यक्ष विनय पटेल, उपाध्यक्ष पवन पटेल, सचिव सीए रूपम सोनछात्रा, कोषाध्यक्ष हिमांशु पटेल, कार्यकारिणी सदस्य सूरज बुद्धदेव, पीयूष पटेल सहित समस्त पदाधिकारियों, शिक्षकों और परिजनों ने खिलाड़ियों को बधाई देकर संभाग स्तरीय स्पर्धा में स्वर्ण पदक और उत्कृष्ट प्रदर्शन की शुभकामनाएं दीं।

बसंतपुर पुलिस के हत्थे चढ़े 3 शराब कोचिए

राजनांदगांव (दावा)। बसंतपुर पुलिस ने अपने थाना क्षेत्र के अवैध शराब बेचने वाले कोचियों पर प्रभावी कार्रवाई करते हुए 3 लोगों को धर दबोचा है और उनके पास से कुल 75 पौवा देशी प्लेन शराब पुलिस ने बरामद किया की है। बंसंतपुर थाना प्रभारी कौशलेंद्र देवांगन ने बताया कि आरोपियों के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम के तहत अपराध पंजीबद्ध करते हुए आरोपी सौरभ प्रजापति को न्यायालय के समक्ष पेश किया है। उन्होंने बताया कि आरोपी सौरभ कुमार पिता सालिक राम प्रजापति उम्र 21 वर्ष निवासी सिंगदई चौक मोहरा के विरूद्ध पूर्व में भी थाना बसंतपुर में आबकारी एक्ट के प्रकरण दर्ज है। इसके अलावा अन्य आरोपियों में थानसिंह

पारधी पिता स्व0 सोहू राम पारधी उम्र 66 साल निवासी वार्ड नं0 43 बंगाली चाल व धनराज रामटेके पिता स्व. बाबूलाल रामटेके उम्र 58 साल निवासी मठपारा रामनगर है।

इस क्रम में प्राप्त मुखबिर सूचना के आधार पर थाना बसंतपुर पुलिस ने उपरोक्त आरोपियों को अवैध शराब बिक्री करते पाया गया। इसमें सौरभ कुमार के कब्जे से 40 पौवा देशी मदिरा शराब एवं बिक्री रकम 300/रु, आरोपी धनराज रामटेके के कब्जे से 20 पौवा देशी प्लेन शराब एवं बिक्री रकम 200/रु तथा आरोपी थानसिंह पारधी के कब्जे से 15 पौवा देशी शराब एवं बिक्री रकम 200/रूपये जप्त कर उनके खिलाफ क्रमशः अपराध क्रमांक 366/26 धारा 34(2) आबकारी एक्ट, 367/26 धारा 34(ए) आबकारी एक्ट एवं 368/26 धारा 34(ए) आबकारी एक्ट पंजीबद्ध किया गया।

सुधा पवार बनी महिला चेंबर की अध्यक्ष

राजनांदगांव (दावा)। प्रदेश अध्यक्ष सतीश थौरानी के दिशा-निर्देशानुसार एवं प्रदेश महिला चेंबर अध्यक्ष श्रीमती इला गुप्ता के मार्गदर्शन में जिला चेंबर अध्यक्ष कमलेश बैद की अनुशंसा में राजनांदगांव महिला जिला चेंबर की अध्यक्ष के रूप में श्रीमती सुधा पवार का मनोनयन किया गया है। श्रीमती सुधा पवार को इस महत्वपूर्ण दायित्व के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व, सक्रियता एवं अनुभव से महिला जिला चेंबर को नई दिशा एवं नई ऊर्जा प्राप्त होगी।

स्वीकारने की क्षमता हो तभी हम आगे बढ़ पाएंगे -श्रेयांशप्रभ जी

चातुर्मासिक प्रवचन

राजनांदगांव (दावा)। 'मन में स्वीकारने की क्षमता हो तो हम आगे बढ़ पाएंगे अन्यथा हमें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। हम हमेशा आगे बढ़ना चाहते हैं और कोशिश भी करते हैं किंतु लेट उठने के कारण हम सफल नहीं हो पाते।' उक्त उद्गार आज सुबह ज्ञान वल्लभ उपाश्रय भवन में मुनि श्रेयांशप्रभ सागर जी ने अपने नियमित प्रवचन में व्यक्त किये। मुनि श्री ने कहा कि जिस दिन हम यह स्वीकार लेंगे कि मैं लेट उठता हूं जिसकी वजह से मेरा काम नहीं हो पाता, सुबह अपने आप ही जल्दी उठने लगेंगे और आपका काम भी सफल होगा। उन्होंने कहा

कि आप किसी भी काम को मन से स्वीकारो तो आपमें स्वयं ही परिवर्तन आ जाएगा। मुनि श्री ने कहा कि किसी भी चीज को मन से स्वीकारने के बाद उसे करने से वह काम अवश्य सफल होता है। श्रेयांशप्रभ सागर जी ने कहा कि पॉजिटिव - नेगेटिव कुछ नहीं होता यह केवल मन की सोच का परिणाम है। उन्होंने कहा कि जो घटना मेरे लिए पॉजिटिव है,वह सामने वाले के लिए नेगेटिव भी हो सकती है। देखना यह है कि हम उसे किस रूप में स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा कि जिसने हमें आगे बढ़ाया वह हमारे लिए अच्छा है और जिसने हमें पीछे धकेला वह हमारे लिए बुरा है, किंतु स्वीकार तो हमें दोनों को ही करना है। जब तक हम स्वीकार नहीं करेंगे तब तक आगे नहीं बढ़ पाएंगे और ना खुश रह पाएंगे। आपके स्वीकार करने से स्थिति बदलती नहीं किंतु आपको सुकून अवश्य मिलता है। यह जानकारी मीडिया प्रभारी विमल हाजरा ने दी।

अनमोल दावा

> जब तक आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप किसी और पर विश्वास नहीं कर सकते।

यह सिर्फ 'जेन जी' की स्मृतियों का मामला नहीं

लाख टके का सवाल है कि जिस पीढ़ी ने पेपर लीक के खिलाफ और केंद्रीय शिक्षा मंत्री का इस्तीफा लेने के लिए जंतर मंतर पर आंदोलन किया या कहीं दूर बैठ कर आंदोलन में हिस्सा लिया, वह कभी क्या भाजपा के ऊपर भरोसा करेगी? यह सवाल इसलिए है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उनका भरोसा जीतने के लिए कई तरह के उपाय कर रहे हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर तीन रील्स पोस्ट की, जिसमें नई पीढ़ी के युवाओं और छात्रों को फ्रेंड्स कह कर संबोधित किया और उनके साथ कनेक्ट करने की कोशिश की। उनकी पार्टी के सांसदों ने पेपर लीक के खिलाफ लाए गए बिल पर संसद के अंदर चर्चा में 'जेन जी' के 'लिंगो' यानी उनकी भाषा व शब्दावली का खूब इस्तेमाल किया। ऐसा दिखाया गया, जैसे भाजपा उनकी असली प्रतिनिधि पार्टी है और उनका ख्याल रख रही है। लेकिन उसके बाद भी सोशल मीडिया में प्रधानमंत्री की रील्स का जैसा मजाक बना और सरकार की हर पहल को जिस तरह से खारिज किया गया वह संकेत है कि इस पीढ़ी का भरोसा भाजपा के ऊपर नहीं बनेगा। इस पीढ़ी की बात करें तो इसकी संख्या बहुत बड़ी है और जब इस पीढ़ी के सारे लोग वोट करने की स्थिति में आएंगे तब भाजपा के सामने असल संकट होगा। एक अनुमान के मुताबिक 'जेन जी' यानी 1997 से 2012 के बीच जन्मी पीढ़ी की आबादी 35 से 38 करोड़ के बीच है। यानी कुल आबादी में इनका हिस्सा लगभग 27 फीसदी के करीब बनता है। इनकी उम्र 14 से 29 साल के बीच है। इनमें से एक चौथाई किशोर उम्र के लोगों को निकाल दें, जो अगले चुनाव तक वोट देने के योग्य नहीं हुए होंगे तब भी यह आबादी 25 करोड़ से ऊपर होगी। यानी 'जेन जी' के 25 करोड़ वोटर होंगे। ये सीधे तौर पर इस आंदोलन के हिस्सेदार थे। ध्यान रहे उनका आंदोलन किसी राजनीतिक लाभ के नहीं था, बल्कि अपने अस्तित्व के लिए था। पेपर लीक से उनकी पढ़ाई और परीक्षा दोनों प्रभावित हो रहे थे। इसलिए वे सरकार की विफलता के खिलाफ आंदोलन पर उतरे। उसके बाद पुलिस ने उनके ऊपर लाठी चलाई, आंसू गैस के गोले छोड़े, पैलेट गन से हमला किया और शॉक बैटन से मारा। उनको रोकने के लिए मेट्रो स्टेशन बंद किए गए। इंटरनेट बंद किया गया। ऐप आधारित सेवाओं को रोकने का प्रयास किया गया। अब उनकी पहचान बता कर सोशल मीडिया में ट्रोल भी किया जा रहा है। उनको धमकियां मिल रही हैं और डराया जा रहा है। अब भी छात्रों और युवाओं को विक्टिम की बजाय अपराधी बताने की कोशिश हो रही है। उनकी स्मृति में ये बातें हमेशा दर्ज रहेंगी। यह सिर्फ 'जेन जी' की स्मृतियों का मामला नहीं है। उनसे पहले और उनसे बाद वाली पीढ़ी की स्मृति का भी मामला है। 'जेन जी' की बात सभी कर रहे हैं हकीकत यह है कि इनके आंदोलन के बाद 'जेन अल्फा' यानी 2012 के बाद जन्मी पीढ़ी के उन बच्चों में भी नई जागरूकता आई है। खास कर ऐसे बच्चे, जिनकी उम्र 10 से 14 साल की है। मध्य प्रदेश के शहडोल में एक आवासीय कन्या विद्यालय की छात्राओं ने बिजली और पानी की समस्या को लेकर कलेक्टर कार्यालय की ओर मार्च किया। हालांकि रास्ते में उनको रोक दिया गया। लेकिन 30 जुलाई की यह घटना दिखाती है कि जंतर मंतर के आंदोलन का असर कितना व्यापक है। ऐसे ही उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में सर्वोदय इंटर कॉलेज के छात्र व छात्राओं ने बुनियादी सुविधाओं की कमी और मनमाना शुल्क वसूलने को लेकर 28 जुलाई को प्रदर्शन किया। बाद में जिला प्रशासन के अधिकारियों ने पहुंच कर स्कूल का मुआयना किया। शहडोल और फतेहपुर में प्रदर्शन करने वाले छात्र, छात्राओं में 14 साल या उससे कम उम्र के भी बच्चे शामिल थे। जाहिर है कि 'जेन जी' का आंदोलन उनको भी प्रभावित कर रहा है। ऐसे बच्चों यानी 'जेन अल्फा' की आबादी भी 35 से 40 करोड़ के बीच है। इनमें से 10 से 14 साल के जो बच्चे हैं यानी एक तिहाई बच्चे 2029 के लोकसभा चुनाव में वोट डालने की उम्र तक नहीं पहुंचेंगे। परंतु उसके बाद के चुनाव में ये मतदाता होंगे। ध्यान रहे यह डिजिटल युग में पैदा हुई पहली पीढ़ी है, जिनके जीवन पर स्मार्टफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया का सबसे ज्यादा प्रभाव है। ये अगले चुनाव में वोट नहीं डालेंगे लेकिन पारिवारिक निर्णयों, उपभोक्ता बाजार और देश के भविष्य के ढांचे में बड़ी भूमिका निभाएंगे। वोट डालने की उम्र तक पहुंचने से पहले ही इनकी ये भूमिकाएं बन जाएंगी। अब इन दोनों पीढ़ियों के अभिभावकों या इनकी पहले वाली पीढ़ी यानी मिलेनियल्स की बात करें तो उनकी आबादी भी 40 करोड़ के आसपास है। यह वो पीढ़ी है, जिसका जन्म 1980 से 1996 के बीच हुआ है। यानी 30 से 46 साल के बीच की उम्र की पीढ़ी। इनके बच्चे 'जेन जी' हैं या 'जेन अल्फा'। क्या इनको अपने बच्चों की तकलीफों का अंदाजा नहीं होगा? क्या उनकी राजनीतिक विचारधारा या मतदान व्यवहार अपने बच्चों की प्राथमिकताओं या आवश्यकताओं से प्रभावित नहीं होगा? अगर होगा तो फिर सोचें, इसका कितना बड़ा असर देश की राजनीति पर होगा। इन तीन पीढ़ियों को मिल कर कुल 120 करोड़ आबादी बनती है। इनमें से अगले चुनाव के समय लगभग 70 करोड़ मतदाता होंगे। अभी के घटनाक्रम पर जैसी प्रतिक्रिया सरकार की है और उस प्रतिक्रिया के ऊपर छात्रों व युवाओं का जैसा रिस्पांस है उसे देखते हुए साफ प्रतीत होता है कि सरकार और एक बड़ी आबादी के बीच संवाद के तार टूट गए हैं। जैसे पिछली पीढ़ियों की याद में बहुत सारी देशी, विदेशी घटनाएं हैं, जिन्होंने उनके विचार गढ़े और उनकी राजनीति को प्रभावित किया।

मतलब मंदिर आंदोलन से लेकर मंडल आंदोलन और उदारीकरण से लेकर वैश्विकरण और 9/11 की घटना के बाद पूरी दुनिया में आतंकवाद के खिलाफ जंग जैसी बहुत सी घटनाओं ने उनके विचार बनाए। अब इस पीढ़ी के विचार संचार क्रांति और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के असर में बन रहे हैं।

''आदिवासी और लोकतंत्र''

ध्रुव पुरुषोत्तम

आज 9 अगस्त है। पूरा विश्व ''विश्व आदिवासी दिवस'' मना रहा है। 1994 में संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को तय किया था ताकि दुनिया को याद दिलाया जा सके कि इस धरती के सबसे पुराने निवासी, प्रकृति के सबसे सच्चे रखवाले- आदिवासी-आज भी संघर्ष कर रहे हैं। और इसी दिन जब हम लोकतंत्र की बात करते हैं, तो सवाल उठता है : क्या लोकतंत्र में आदिवासी की आवाज उतनी ही मजबूत है जितनी बाकी सबकी?

(आज विश्व आदिवासी दिवस पर विशेष)

1. लोकतंत्र की जड़ें आदिवासी समाज में हैं

हम कहते हैं लोकतंत्र 2500 साल पहले यूनान से आया। लेकिन सच ये है कि भारत के जंगलों में, गांवों में, गोंड, भील, संथाल, उरांव समाज में हजारों साल से ''ग्राम सभा'' चल रही थी।

गोंड समाज की ''मांदी बैठक'', मुंडा समाज की ''परहा व्यवस्था'', भील समाज की ''तड़वी'' व्यवस्था - ये सब लोकतंत्र के ही रूप थे। वहां राजा नहीं था, सरपंच तानाशाह नहीं था। फैसला सब मिलकर करते थे। पेड़ काटना हो तो पूरे गांव की इजाजत लेना। नदी का पानी बांटना हो तो सबकी सहमति आवश्यक होगी।

इसे कहते हैं ''सहभागी लोकतंत्र''। वोट डालने के बाद 5 साल तक भूल जाने वाला लोकतंत्र नहीं, बल्कि रोज के फैसले में भागीदारी वाला लोकतंत्र।

ICS जयपाल मुंडा ने भी कहा था - ''लोकतंत्र सिर्फ सरकार का रूप नहीं, ये जीने का तरीका है''। और ये तरीका आदिवासी सबसे पहले जानते थे। जल, जंगल, जमीन को साझा संपत्ति मानना - यही तो सच्चा लोकतंत्र है।

2. संविधान ने आदिवासी को क्या दिया?

26 जनवरी 1950 को जब संविधान लागू हुआ, तो ICS जयपाल मुंडा और आदिवासी नेताओं ने मिलकर आदिवासियों के लिए विशेष अधिकार मांगे।

अनुच्छेद 244, पांचवी और छठी अनुसूची - ये आदिवासी इलाकों के लिए ''स्व-शासन'' की गारंटी हैं।

PES कानून 1996 - इसमें कहा गया कि अनुसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभा ही सबसे ऊपर है। जमीन अधिग्रहण, खनन, शराब दुकान - सब ग्राम सभा से पूछकर होगा।

अनुच्छेद 46 - राज्य कमजोर वर्गों, खासकर अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों की रक्षा करेगा।

मतलब कागज पर लोकतंत्र ने आदिवासी को राजा बना दिया। लेकिन जमीनी हकीकत ....सिफर।

3. लोकतंत्र की चुनौती: संख्या कम, समस्या बड़ी भारत में आदिवासी आबादी सिर्फ 10.6प्रतिशत है। 2011 की जनगणना के अनुसार 12.45 करोड़। लोकतंत्र में संख्या ही ताकत है। इसलिए कई बार आदिवासी की बात संसद से लेकर पंचायत तक दब जाती है।

3 सबसे बड़ी चुनौतियां :

पहली - विस्थापन का लोकतंत्र: -आजादी के बाद से अब तक 2 करोड़ से ज्यादा आदिवासियों की 11 लाख हैक्टेयर भूमि अभ्यारण्य, बांध, खदान, उद्योग के नाम पर विस्थापित हुए। मुआवजा तो दूर की बात उनसे पूछा तक नहीं गया इस तरह उनके साथ छल हुआ है जिनकी भरपाई सरकार को करना चाहिए। संविधान कहता है ग्राम सभा की सहमति जरूरी है, लेकिन फाइल में दस्तखत हो जाते हैं। क्या ये लोकतंत्र है?

दूसरी - प्रतिनिधित्व का लोकतंत्र- -लोकसभा में 47 सीटें ST के लिए आरक्षित हैं। विधानसभा में 554 सीटें। लेकिन क्या ये सांसद/विधायक सच में आदिवासी मुद्दे उठाते हैं? या पार्टी के व्हिप के आगे झुक जाते हैं? 5 साल में एक बार वोट मांगने आना, फिर 5 साल तक नहीं दिखना - ये कैसा लोकतंत्र?

तीसरी - पहचान का लोकतंत्र- आज भी स्कूल में आदिवासी बच्चे को ''तुम जंगली हो'' सुनना पड़ता है। नौकरी में आरक्षण पर सवाल उठते हैं। मीडिया में आदिवासी को सिर्फ ''असभ्य'' या ''मासूम'' के दो चश्मे से दिखाया जाता है। जब तक सम्मान नहीं, तब तक बराबरी का लोकतंत्र अधूरा है।

4. फिर भी उम्मीद क्यों है? आदिवासी ने लोकतंत्र को जिंदा रखा

पहली - कानूनी जीत- ''समता जजमेंट 1997'' में सुप्रीम कोर्ट ने कहा - अनुसूचित क्षेत्रों में आदिवासी की जमीन गैर-आदिवासी को नहीं बेची जा सकती। ''नियमगिरि आंदोलन'' में ओडिशा की डोंगरिया कोंध जनजाति ने ग्राम सभा के वोट से वेदांता कंपनी को भगा दिया। ये लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है।

दूसरी - राजनीतिक जीत -द्रौपदी मुर्मू जी आज देश की राष्ट्रपति हैं। वो एक आदिवासी महिला हैं। झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश में कई मुख्यमंत्री, मंत्री आदिवासी समाज से आए। इसका मतलब दरवाजा बंद नहीं है।

तीसरी - सांस्कृतिक जीत: -आज ''जल जंगल जमीन'' का नारा सिर्फ आदिवासी का नहीं रहा। जलवायु परिवर्तन की लड़ाई में पूरी दुनिया आदिवासी के ज्ञान को मान रही है, आज पर्यावरण बचा है तो सिर्फ आदिवासियों के बदौलत। ह भी कहता है - जंगल बचाना है तो आदिवासी को अधिकार दो।

5. आगे का रास्ता: ''सामाजिक लोकतंत्र'' बनाना होगा

जयपाल मुंडा ने कहा था - ''राजनीति में हम एक व्यक्ति एक वोट मानेंगे, लेकिन सामाजिक और आर्थिक जीवन में एक व्यक्ति एक कीमत नहीं मानते। यदि हमने ये असमानता जल्दी नहीं मिटाई तो राजनीतिक लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा''।

इसलिए आगे 3 काम करने होंगे:-

1. PESA को असली ताकत देना : - हमने देखा है आज भी अनुसूचित क्षेत्रों में pesa लागू नहीं है, ग्राम सभा को सिर्फ कागज पर नहीं, बजट और अधिकार भी चाहिए। जंगल का 100% अधिकार आदिवासी ग्राम सभा को मिले।

2. शिक्षा और भाषा: आदिवासी बच्चों को अपनी मातृभाषा गोंडी, भीली, संथाली में प्राथमिक शिक्षा मिले। IAS, डॉक्टर, इंजीनियर आदिवासी समाज से ज्यादा बनें ताकि नीति बनाने वाले टेबल पर हमारी आवाज हो।

3. विकास का मॉडल बदलना: - आज हम 10 डॉक्टर बनाकर 10 हजार बीमारी पैदा कर रहें हैं क्या यही विकास है - हमें जैविक खेती अपनाकर छोटे अनाज जैसे - कोदो,कुटकी, मडिया का उत्पादन कर अपने पुरखों की विरासत को बढ़ाने और आने वाली पीढ़ी को बचाने की जरूरत है। विकास का मतलब सिर्फ फैक्ट्री और रोड नहीं। विकास का मतलब है - जंगल बचे, नदी बचे, संस्कृति बचे। ''विकास के साथ विस्थापन नहीं'' - ये फार्मूला बनाना होगा।

4. आदिवासी क्षेत्रों में कलेक्टर, SDM, मुख्य कार्यपालन अधिकारी,जिला शिक्षा अधिकारी, सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास व अन्य सभी कर्मचारी जनजाति वर्ग से होना चाहिए तभी ये अधिसूचित क्षेत्रों में pesa का क्रियान्वयन सही सही हो सकता है।

जय जोहार का मतलब

''जय जोहार'' का मतलब सिर्फ अभिवादन नहीं है। इसका मतलब है - ''मैं तुम्हारे जीवन को सम्मान देता हूं''।

सच्चा लोकतंत्र भी यही है - हर जीवन को सम्मान। आदिवासियों ने 5000 साल से धरती को सम्मान दिया। अब लोकतंत्र की बारी है कि वो आदिवासियों को सम्मान दे।

आज विश्व आदिवासी दिवस पर हम ये संकल्प लें: - हम संविधान बचाएंगे, ग्राम सभा मजबूत करेंगे, और ये साबित करेंगे कि भारत का लोकतंत्र तभी पूरा होगा जब आखिरी छोर पर बैठा आदिवासी भी कहे - ''ये मेरा देश है, ये मेरी सरकार है''। क्योंकि जब आदिवासी खुश होगा तो जंगल खुश होगा। जब जंगल खुश होगा तो देश खुश होगा। जल जंगल जमीन की जय! संविधान की जय! जय जोहार।।

(भू अभि.अधिकारी, सिविल लाइन राजनांदगांव)

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम 451 : मार्ग दुर्गम वन क्षेत्र, उफनती नदियों व अविजित पर्वत श्रृंखलाओं से

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय

सुतीक्ष्ण मुनि के अनुरोध पर श्रीराम, सीता जी और लक्ष्मण जी ने अपना आसन ग्रहण किया।

श्री राम ने सुतीक्ष्ण मुनि का धन्यवाद करते हुए कहा, ÷ अहोभाग्य महामुनि ! मेरे वन प्रवास के इस कालखंड में आपसे भेंट मेरी बड़ी उपलब्धि है। मैं अपने अनुज लक्ष्मण और भार्या सीता के साथ वनों की खाक छान रहा हूँ।÷

''मुझे ज्ञात है श्री राम! आप चित्रकूट से आगे की यात्रा पर हैं। मैंने अपने जन्मभर की साधना का फल आज प्राप्त कर लिया है। साक्षात श्री हरि आपके रूप में इस आश्रम में पधारे हैं। अब यह स्थान और इसके आसपास का कई योजन तक का क्षेत्र आपकी अनवरत यात्रा को एक दीर्घ विराम देने के सर्वथा उपयुक्त है।'' सुतीक्ष्ण मुनि ने भाव विह्वल होते हुए कहा।

सीता जी ने कहा, '' हे महामुनि । चित्रकूट के जन बहुल क्षेत्र के विपरीत यह वनक्षेत्र विरल जन उपस्थिति वाला है। रघुनंदन की कठोर जीवनचर्या के अनुपालन के लिए यह क्षेत्र अत्यंत अनुकूल प्रतीत होता है।''

सुतीक्ष्ण सुनि ने मुस्कुराते हुए कहा, '' सत्य कहा देवी। जिस विराट उद्देश्य को श्री राम को पूरा कहना है, उसका मार्ग दुर्गम वन क्षेत्र, उफनती नदियों, और अविजित पर्वत श्रृंखलाओं से होकर जाता है। मेरे आश्रम में आपका आगमन उनके ध्येय की दृष्टि से भी सर्वथा उचित है।''

चर्चा आगे बढ़ती और लक्ष्मण जी कुछ बोलने को उद्यत हुए। सुतीक्ष्ण सुनि ने कहा, ''मैं आग्रह करता हूँ कि आप तीनों अब विश्राम करें, तथापि सौमित्र कुछ कहना चाहते हैं। वे अपनी बात अवश्य रखें।''

लक्ष्मण जी ने कहा, ''मैं मानव अस्थियों का विशाल पर्वत देखकर आया हूँ महामुनि। मैं दुष्ट राक्षसों के उत्स तक जल्दी पहुंचना चाहता हूँ।''

''विमर्श होगा किंतु आज रात्रि विश्राम के बाद।'' सुतीक्ष्ण मुनि ने उत्तर दिया, ''अवश्य सौमित्र!''

(भगवान श्री राम की प्रेरक गाथा विश्व की अनेक भाषाओं की शताधिक रामायणों में लिखी गई है।इस कृतज्ञ लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने विविध प्रसंगों में अनेक स्थानों पर उन्हें मिलने वाली कृपापूर्ण सूझ के साथ - साथ एक साधारण भक्त की अपनी नवीन रचनात्मक कल्पनादृष्टि का भी सहारा लिया है और रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

(मन में बसे हैं राम के पिछले तीन अंको में त्रुटिवश अंक संख्या 348, 349 और 350 मुद्रित हो गया। उन्हें सुधारकर क्रमशः 448, 449 और 450 पढ़ा जाए। दैनिक दावा के पाठकों के लिए आज प्रस्तुत है- इस श्रृंखला का 451 वां अंक)

शब्द सामर्थ्य -124

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. समाप्ति, खात्मा 3. रोगी, बीमार 5. गंभीरता, गहराई 6. बलपूर्वक, जबरदस्ती, व्यर्थ 9. लानत, तिरस्कार सूचक एक शब्द 10. लक्ष्मी, कमला 11. औषधालय 13. नाव खेने का लकड़ी का यंत्र 14. सतह, 'लेवल' 15. बिजली, तड़ित 17. चौकसी, सावधानी, बचाव 19. कहने वाला, वाचनकर्ता 20. सुंदर, अच्छा, बढ़िया 21. लगातार, तड़-तड़ करते हुए।

ऊपर से नीचे
1. शरीर का कोई भाग, शरीर 2. खोज-बीन, जांच-पड़ताल 3. वोट देने का हक 4. जो अत्यधिक शक्तिशाली व कठोर प्रकृति का हो, दृढ़, मजबूत 7. बरसात, पावस, बारिश 8. भरना, अटना, अंदर करना 12. घटना, हादसा, दुर्घटना 13. लिबास, पहनने का ढंग 16. नीला वस्त्र पहने वाला, नीला वस्त्र 17. ऐक्य, एक होने का भाव 18. दिल्ली स्थित प्रसिद्ध जेल।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 123 का हल

सू- दोकू क्र.124

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.123 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

राशिफल

मेष

आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। आज आपको व्यापार में अच्छा धन लाभ होगा। आज आपको अपने विचारों के साथ-साथ दूसरे व्यक्तियों के विचारों पर भी गौर देने की जरूरत है। आज आय के साधन बढ़ने के साथ ही खर्चों की भी अधिकता रह सकती है। आज आप अपने कार्यों में बाहरी व्यक्तियों का बिलकुल भी हस्तक्षेप न होने दें।

वृष राशि

आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आज आप अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करेंगे। आज आपके विचारों में स्थिरता और दृढ़ता रहने से आप अपने कार्यों को अच्छी तरह कर पाएंगे। आज आप दूसरों पर विश्वास न करके खुद पर भरोसा रखें और अपनी बेहतर प्रतिभा को दिखाते हुए अपने कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने की कोशिश करें।

मिथुन

आज का दिन आपके लिए बहुत शानदार रहेगा। आज आपको नौकरी में उन्नति के साथ-साथ , दूसरी जगह से भी ऑफर आ सकता है। इस राशि के छात्र आज किसी नये कोर्स को ज्वॉइन करने का मन बना सकते हैं। आज आप परिवार के साथ वस्त्र आभूषण जैसी खरीदारी में सुखद समय व्यतीत करेंगे। आज आप अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें।

कर्क

आज का दिन आपके सुखद बना रहेगा। आज आपके सोचे हुए काम पूरे होंगे और आप किसी नए काम की शुरुआत भी कर सकते हैं। आज आपको जीवनसाथी के सहयोग से किसी बड़े काम में सफलता मिलेगी। आज आपको इंपोर्ट और एक्सपोर्ट के बिजनेस में बड़ा फायदा होने के योग हैं। आज आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

सिंह

आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। आज आप उन चीजों को महत्व दें जो सच में आपके लिए महत्वपूर्ण हैं , ऐसा करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। आज संतान की किसी उपलब्धि से घर में खुशी का माहौल बना रहेगा। आज आप अपने काम खुद ही करें और निवेश संबंधी गतिविधियों में जल्दबाजी न करें।

कन्या

आज का दिन आपके लिए बेहद खास रहेगा। आज आपको रोजगार में तरक्की के नए अवसर प्राप्त होंगें। आज रास्ते में जाते समय आपकी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से हो सकती है जिसका फायदा आपको भविष्य में अवश्य मिलेगा। आज आप दोस्तों के साथ के पार्टी का प्लान बना सकते हैं , जिससे आपको खुशी मिलेगी।

तुला

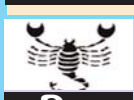

आज का दिन आपके लिए बेहतरीन रहेगा। आज सोसाइटी में आपको अपनी कार्यशीलता के लिए सम्मानित किया जा सकता है। आज आपको बिजनेस में अच्छा धन लाभ होगा लेकिन आप स्टाफ की गतिविधियों पर नजर बनायें रखें। आज आप माता-पिता के साथ किसी धार्मिक यात्रा का प्लान बना सकते हैं।

वृश्चिक

आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। आज आप नए बिजनेस या फिर उससे सम्बन्धित किसी योजना पर विचार कर सकते हैं। आज आपकी अध्यात्म और धर्म-कर्म के कार्यों में भी रुचि बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक सुख की प्राप्ति होगी। आज आपको अपने व्यक्तिगत कार्यों के बीच यह ध्यान रखना जरूरी है कि घर के बड़े बुजुर्गों की सेवा से न चूकें।

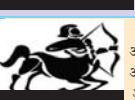

धनु

आज आपका दिन खुशनुमा रहने वाला है। आज प्राइवेट ऑफिस में कार्यरत व्यक्तियों को उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। आज आपको कारोबारी मामलों में बहुत सावधानी रखने की जरूरत है। आज आप किसी भी कार्य को करते समय धैर्य और संयम बना के रखें। आज आपकी रुचि रचनात्मक कार्यों में रहेगी, आप पेंटिंग बनाने का प्रयास करेंगे।

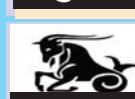

मकर

आज का दिन आपके लिए राहत से भरा रहेगा। आज आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा, जिससे आपका मन संतुष्ट रहेगा। आज सामाजिक और सोसाइटी से सम्बन्धित गतिविधियों में आपके विचारों को विशेष प्राथमिकता मिलेगी। आज आप जीवनसाथी के सहयोग से किसी काम को पूरा करने में सफल रहेंगे।

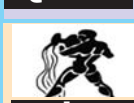

कुंभ

आज का दिन आपके लिए बेहतरीन रहेगा। आज अनुभवी व्यक्तियों का मार्गदर्शन लेना आपके लिए लाभदायक रहेगा। आज किसी विदेशी कंपनी से जॉब के लिए कॉल आ सकती है। आज घर का माहौल सुखद और शांतिपूर्ण बना रहेगा, आज किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है। आज आपको कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामलों में राहत मिलेगी।

मीन

आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आपको बिजनेस में बड़ा लाभ होगा, जिससे आपके घर में खुशियां आएंगी। आज आपको अटके हुए धन की प्राप्ति होगी, जिसका उपयोग आप अपने निजी कार्यों में कर सकते हैं। आज दिन की शुरुआत कुछ व्यस्तता वाली रह सकती है लेकिन अंत में परिणाम बेहतर ही हासिल होंगे।

कहीं आप 'जहर' तो नहीं खा रहे?

पनीर शाकाहारी खाने का अहम हिस्सा है। प्रोटीन का बहेतरीन सोर्स होने के साथ-साथ यह स्वाद में भी काफी लाजवाब होता है, लेकिन जो पनीर आप घर ला रहे हैं, क्या वो असली है? दरअसल, बाजार में मिलने वाला हर पनीर असली हो ये जरूरी नहीं है। हाल ही में, फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने गलत लेबलिंग और सेहत से जुड़े खतरों के देखते हुए एनालॉग पनीर पर बैन लगा दिया है। अब आप सोच रहे होंगे कि एनालॉग पनीर होता क्या है? एनालॉग पनीर असली पनीर की तरह शुद्ध 100त्न डेयरी से नहीं होती। इसमें दूसरी चीजें मिलाई जाती हैं, जो सेहत के लिए नुकसानदेह हैं। आइए जानें ये होता क्या है, कैसे बनता है, इसके नुकसान क्या हैं और इसकी पहचान कैसे कर सकते हैं।

क्या है एनालॉग पनीर?

बाजार में पनीर की मांग देखते हुए पनीर का एक दूसरा ऑप्शन तैयार किया, जिसे एनालॉग पनीर कहा जाता है। पारंपरिक पनीर शुद्ध रूप से दूध से बनता है, लेकिन एनालॉग पनीर में मिल्क सॉलिड्स, वेजिटेबल ऑयल, इमल्सीफायर्स और स्टेबलाइजर्स का इस्तेमाल किया जाता है। ये दिखने बिल्कुल असली पनीर जैसा लगता है, छूने पर भी हो सकता है आपको कोई फर्क महूसस न हो, लेकिन ये सेहत के लिए काफी नुकसानदेह साबित हो सकता है। इसलिए इस पर बैन भी लगाया गया है।

कैसे बनता है एनालॉग पनीर?

एनालॉग पनीर बनाने के लिए स्किम्ड मिल्क पाउडर, पाम ऑयल जैसे सस्ते वेजीटेबल फैट्स, स्टार्च, इमल्सीफायर्स और प्रोसेसिंग सॉल्ट्स का इस्तेमाल किया जाता है। इन चीजों को मिलाकर एक पेस्ट बनाया जाता है, थर्मल प्रोसेसिंग के जरिए इसे स्टेबल किया जाता है। इसकी सामग्री और अल्ट्रा प्रोसेस्ड तरीके से बनाए जाने की वजह से इसमें पोषक तत्वों की काफी कमी हो जाती है और प्रोसेस्ड फैट और सोडियम की मात्रा काफी बढ़ जाती है।

असली पनीर और एनालॉग पनीर में फर्क

असली प्रोटीन में प्राकृतिक दूध का प्रोटीन होता है और दूध के इस्तेमाल के कारण नेचुरल फैट्स होते हैं, लेकिन एनालॉग पनीर में स्किम्ड मिल्क सॉलिड इस्तेमाल होता है, जिससे प्रोटीन की मात्रा और गुणवत्ता, दोनों काफी कम होते हैं। एनालॉग पनीर में पाम ऑयल का इस्तेमाल होता है, जिससे इसमें अनहेल्दी फैट्स की मात्रा ज्यादा होती है। इसके अलावा, ताजा पनीर बहुत कम प्रोसेस्ड होता है, जबकि एनालॉग पनीर अल्ट्रा प्रोसेस्ड होता है। एनालॉग पनीर में पोषक तत्वों की मात्रा भी काफी कम होती है, लेकिन इसमें कैलोरी, अनहेल्दी फैट और सोडियम ज्यादा पाया जाता है।

कविता

सावन ल खोजत हंव

ओ हो तो तो के बोली संग, तुतारी ल खोजत हंव।
नागर बईला जोता संग, दतारील खोजत हंव।।
तरिया नदिया नरवा के, पानी ल खोजत हवं।।
उछलत कुदत नाचत, मेढ़की रानी ल खोजत हंव।।
पानी म छिप्पिर छापर, वो मस्ती ल खोजत हंव।
डोकरा बबा छाये छानी, वो बस्ती ल खोजत हंव।।
टेटंका मेंचका झिंगर के, गान ल खोजत हव ।
रिमझिम गिरत पानी के, सुरतान ल खोजत हंव।।
करिया करिया बादर म, बिजली के चमक ल खोजत हंव।।
सावन के झड़ी पानी म, फोटका ल खोजत हंव।
सवनही गरभही म करे, टोटका ल खोजत हंव।।
गाड़ा बईला के परे वो दावन ल खोजत हंव।
हरियार खेती खार संग,
मय सावन ल खोजत हंव।।

आनंदराम सार्वा अनंत
कु, बो. भाठागांव

प्रधान आरक्षक शीतल यादव आत्महत्या मामला: निष्पक्ष जांच और पोते को अनुकंपा नियुक्ति की मांग को लेकर परिजनों ने कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

खैरागढ़ (दावा)। छुईखदान थाने में पदस्थ रहे प्रधान आरक्षक शीतल यादव की शनिवार 6 जून को हुई संदिग्ध आत्महत्या का मामला अब प्रशासनिक और कानूनी हलकों में गरमा गया है। मृतक के बुजुर्ग माता-पिता पुनीत राम यादव व चंपा यादव तथा भाई भानुप्रताप यादव ने कलेक्टर खैरागढ़ को ज्ञापन सौंपकर घटना की निष्पक्ष एवं गहन जांच कराने तथा मृतक की पत्नी के बजाय उनके पोते को अनुकंपा नियुक्ति देने की गुहार लगाई है।

पुलिस अधीक्षक कार्यालय पर आवेदन न लेने का आरोप

मृतक के भाई भानुप्रताप यादव का आरोप है कि घटना के बाद से परिवार लगातार पुलिस प्रशासन से निष्पक्ष जांच की मांग कर रहा था। पुलिस अधीक्षक कार्यालय में लिखित आवेदन देने का प्रयास किया गया, लेकिन वहां आवेदन स्वीकार नहीं किया गया। अंततः निराश होकर परिजनों को कलेक्टर कार्यालय का दरवाजा खटखटाना पड़ा। ज्ञापन सौंपे जाने के 10 दिन बीत जाने के बाद भी अब तक कोई ठोस प्रशासनिक कार्रवाई न होने से परिवार में असंतोष है।

सीसीटीवी फुटेज और बयानों में विरोधाभास का दावा

परिजनों ने आवेदन में घटना से जुड़ी कई संदिग्ध परिस्थितियों को रेखांकित किया है जिसमें समय का अंतर : मृतक की पत्नी सती यादव के अनुसार शीतल यादव रात 12 बजे घर लौटे थे, जबकि परिजनों का दावा है कि वे रात 9 से 10 बजे के बीच ही घर पहुंच चुके थे। पत्नी द्वारा सुबह 4 बजे घटना की जानकारी मिलने की बात कही जा रही है, जबकि परिजनों के अनुसार आसपास के सीसीटीवी फुटेज में पत्नी रात के समय घर के बाहर आती-जाती दिखाई दे रही हैं। परिजनों ने इस फुटेज को जांच में शामिल करने का आग्रह किया है। मायके प्रवास व मनमुटाव- घटना से पूर्व 27 अप्रैल से 20 मई के बीच पत्नी के मायके प्रवास और दोनों के बीच चल रहे कथित मनमुटाव के बिंदुओं की भी जांच की मांग की गई है।

बेटे लक्षित यादव के लिए अनुकंपा नियुक्ति की मांग

मामले में दूसरा बड़ा विवाद अनुकंपा नियुक्ति को लेकर है। वृद्ध माता-पिता का कहना है कि शीतल यादव ही उनके बुढ़ापे का एकमात्र सहारा थे। परिजनों ने मांग की है कि अनुकंपा नियुक्ति पत्नी सती यादव को न देकर मृतक के पुत्र लक्षित यादव के नाम आरक्षित की जाए, ताकि उसका भविष्य सुरक्षित हो सके। पेंशन का लाभ भले ही पत्नी को दे दिया जाए, लेकिन नौकरी पर पहला हक बेटे का होना चाहिए।

जांच के बाद ही साफ होगी स्थिति

परिजनों का स्पष्ट कहना है कि उनका मकसद किसी पर बेबुनियाद आरोप लगाना नहीं, बल्कि अपने बेटे की मौत से जुड़े सवालों का सच जानना है। उन्होंने निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर वैधानिक कार्रवाई की मांग की है। हालांकि, परिजनों द्वारा लगाए गए आरोपों और आत्महत्या के वास्तविक कारणों की आधिकारिक पुष्टि पुलिस एवं प्रशासनिक जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी।

बेसहारा महिला ने लावारिस हालत में 3 किलो के स्वस्थ्य बच्चे को दिया जन्म

जच्चा-बच्चा स्वस्थ एवं सुरक्षित - डॉ. जय किशन महोबिया

डोंगरगढ़ (दावा)। लगभग डेढ़ माह से डोंगरगढ़ में गर्भ लिए घूम रही एक बेसहारा महिला ने सार्वजनिक स्थल पर 3 किलो के स्वस्थ्य बच्चे को जन्म दिया। शनिवार की शाम कालका पारा में लावारिस हालत में 3 किलो के एक स्वस्थ बच्चे को लेकर घूमती रही। जिसकी सूचना किसी ने पुलिस को दी तब जाकर उसे 108 एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां पर डाक्टरों ने जच्चा - बच्चा दोनों की देखभाल शुरू की।

डॉक्टर जयकिशन महोबिया ने बताया कि 108 के माध्यम से उक्त महिला को शाम 7 बजे लाया गया था बच्चे और मां की नाल जुड़ी हुई थी। जिसे यहां पर काटा गया और जरूरी प्राथमिक उपचार दिया गया है। फिलहाल जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ है, महिला स्वमं को गोंदिया कचहरी मोहल्ला की निवासी बता रही है।

विपरीत परिस्थिति में भी गर्भ में सुरक्षित रखा बच्चे को

कई दिनों से शहर में लावारिस हालत में घूम रही बेसहारा गर्भवती महिला विपरीत परिस्थिति में भी गर्भ में धारण किए अपने बच्चे को पूर्णतः सुरक्षित रखने के लिए कितना संघर्ष की होगी, एक मां ही उसकी स्थिति का आकलन कर सकती है। विचारणीय प्रश्न यह है कि, पुलिस प्रशासन, नगर पालिका प्रशासन, दर्जनों जनप्रतिनिधियों, समाज सेवियों,अनाथ आश्रम व पालिका द्वारा संचालित आश्रय स्थल के रहते एक महिला गर्भवती अवस्था में लावारिस जिंदगी जीने मजबूर हुई। जिसे बिना किसी सहारे के सार्वजनिक स्थान पर बच्चों को जन्म देना पड़ा।

पहला कॉलम...

शहर के हर वार्ड में अब पालिका के नोडल अधिकारी व कर्मचारी की समस्याओं पर रहेगी पैनी नजर

मौके से मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराने से संबंधित जानकारी सीधे सीएमओ को दी जाएगी

डोंगरगढ़ (दावा)। नगर पालिका परिषद के विभिन्न वार्डों की मूलभूत समस्याओं को लेकर एक नई व्यवस्था शुरू करने की तैयारी की गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर पालिका अधिकारी राजेश तिवारी द्वारा नगर पालिका के वार्ड क्रमांक 1 से 24 तक प्रत्येक वार्ड में एक-एक कर्मचारी को जिम्मेदारी दी जाएगी।नियुक्त कर्मचारी वार्ड में जाकर वार्डवासियों से सीधे संपर्क करेंगे और नल-पानी, नाली, सफाई, बिजली से जुड़ी नगर पालिका संबंधी समस्याओं सहित अन्य स्थानीय समस्याओं की जानकारी मौके पर लेंगे। मौके से सी एम ओ तक जानकारी पहुंचाई जाएंगी।

वार्ड में नियुक्त कर्मचारी समस्याओं का निरीक्षण कर उनकी जानकारी अपने मोबाइल के माध्यम से व्हाट्सएप पर नगर पालिका अधिकारी/ सीएमओ राजेश तिवारी तक पहुंचाएंगे। इससे समस्या सामने आने के बाद उसके निराकरण की प्रक्रिया को तेजी मिलने की उम्मीद है। कार्य योजना के अनुसार वार्डवासियों के लिए वार्ड के प्रभारी कर्मचारी का मोबाइल नंबर सार्वजनिक किया जाएगा, ताकि लोग अपनी समस्या सीधे जिम्मेदार कर्मचारी तक पहुंचा सकें। इससे छोटी-छोटी समस्याओं के लिए बार-बार नगर पालिका कार्यालय या पार्षद के चक्कर लगाने की जरूरत कम हो सकती है।

पार्षदों की भी जिम्मेदारी होगी आसान

नई व्यवस्था से पार्षदों को भी राहत मिलने की संभावना है। वार्ड की समस्याओं की नियमित जानकारी नगर पालिका कर्मचारी द्वारा लेने से वार्ड का लगातार निरीक्षण और समस्याओं की रिपोर्टिंग व्यवस्थित तरीके से हो सकेगी। नगर पालिका की इस पहल का मुख्य उद्देश्य वार्ड स्तर पर समस्याओं की पहचान, अधिकारियों तक त्वरित सूचना और उनके निराकरण की प्रक्रिया को आसान बनाना बताया गया है।

जनसहयोग व पंचायत की पहल: जादूटोला-दैहान मार्ग की अस्थायी मरम्मत से ग्रामीणों को मिली राहत

बांधाबाजार (दावा)। ग्राम पंचायत एवं स्थानीय ग्रामीणों के संयुक्त प्रयास से जादूटोला से दैहान पहुँच मार्ग की अस्थायी मरम्मत का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। बोल्डर युक्त मुरूम डालकर गड्ढों को भरा गया, जिससे वर्षों से बदहाल सड़क पर आवागमन करने वालों को फौरी राहत मिली है। यह पहुँच मार्ग पिछले कुछ वर्षों से रख-रखाव के अभाव में जर्जर स्थिति में पहुँच चुका था। इसके चलते छात्रावास में रहने वाले छात्र-छात्राओं, आपातकालीन स्थिति में अस्पताल जाने वाले मरीजों और दैनिक आवाजाही करने वाले आम ग्रामीणों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। बारिश के मौसम में स्थिति और भी गंभीर हो जाती थी।समस्या की गंभीरता को देखते हुए 06 अगस्त 2026 को ग्राम पंचायत एवं जनसहयोग से मार्ग में बोल्डर और मुरूम बिछाकर समतलीकरण किया गया। इस मरम्मत कार्य से राहगीरों और विद्यार्थियों को आवागमन में सुविधा होगी।कार्य के दौरान ग्राम पंचायत जादूटोला की सरपंच श्रीमती शुक्रवारों बाई नेताम, शाला प्रबंध एवं विकास समिति (SMDC) अध्यक्ष श्री उदय प्रकाश यादव, पूरन साहू तथा केशव साहू मौक़े पर उपस्थित रहे और सक्रिय योगदान दिया।

चाकू लहराकर आम लोगों को डरा-धमका रहा आरोपी गिरफ्तार

डोंगरगढ़ (दावा)। पुलिस ने अपने थाना क्षेत्र में अपराध रोकने प्रभावी कदम उठाते हुए एक चाकू बाज को आरोपी धर दबोचा है। पुलिस ने उक्त आरोपी को सरस्वती शिशु मंदिर के सामने धारदार चाकू लहराकर लोगों डराते हुए गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से उक्त धारदार चाकू बरामद की है। बाद में उसे न्यायालय में पेश कर आर्म्स एक्ट के तहत जेल भेज दिया है। घटना के संबंध में डोंगरगढ़ थाना प्रभारी आशीर्वाद रहटगावकर ने बताया कि मुखबिर से सूचना प्राप्त होने पर कि सरस्वती शिशु मंदिर के सामने एक व्यक्ति अपने पास धारदार चाकू रखकर उसे लहराते हुए आम लोगों को डरा-धमका रहा है। इस पर पुलिस द्वारा तत्काल मौके पर पहुंचकर घेराबंदी कर आरोपी शुभम वर्मा पिता केशव वर्मा, उम्र 20 वर्ष, निवासी नाकापारा, वार्ड नंबर 01, डोंगरगढ़ को पकड़ा गया। आरोपी के कब्जे से एक धारदार चाकू बरामद किया गया।

जर्जर सड़क की मरम्मत पर अधिकारियों की बेरुखी, जनप्रतिनिधियों ने पीडब्ल्यूडी के कार्यपालन अभियंता को लिखा पत्र; जल्द कार्रवाई की मांग

गंडई/पंडरिया (दावा)। नगर के प्रमुख चौक-चौराहों और मुख्य मार्गों की जर्जर स्थिति को लेकर लोक निर्माण विभाग की उदासीनता के खिलाफ स्थानीय जनप्रतिनिधियों का आक्रोश गहराता जा रहा है। बार-बार ध्यान आकृष्ट कराए जाने के बावजूद सुधार न होने पर जनप्रतिनिधियों ने लोक निर्माण विभाग संभाग खैरागढ़ के कार्यपालन अभियंता को 07 अगस्त को लिखित पत्र सौंपकर सड़कों के जीर्णोद्धार और लापरवाह अधिकारी पर सख्त कार्रवाई की मांग की है।

बदहाल सड़कें बन रहीं हादसों का कारण

नगर पंचायत गंडई के मुख्य तिरंगा चौक से कवर्धा रोड, खैरागढ़ रोड, टिकरीपारा रोड और पंडरिया रोड की स्थिति पिछले दो वर्षों से भी अधिक समय से जर्जर बनी हुई है। तिरंगा चौक सहित मुख्य मार्गों पर बने बड़े-बड़े गड्ढों के कारण व्यापारी, स्कूली बच्चे और आम नागरिक रोजाना दुर्घटनाओं का शिकार हो रहे हैं। नगर पंचायत अध्यक्ष लाल टारकेश्वर शाह खुसरो तथा वार्ड क्रमांक 1 के पार्षद तामेश्वर साहू, वार्ड क्रमांक 15 के पार्षद व विधायक प्रतिनिधि दिलीप ओगरे के संयुक्त हस्ताक्षर युक्त पत्र में सड़कों के रखरखाव में उपेक्षा का आरोप लगाया गया है।

सब-इंजीनियर पर लापरवाही और फोन न उठाने का आरोप

जनप्रतिनिधियों ने विभाग के प्रभारी सब-इंजीनियर राधेश्याम वर्मा की कार्यशैली पर गंभीर सवाल उठाए हैं। आरोप है कि सब-इंजीनियर न तो क्षेत्र का निरीक्षण करते हैं और न ही जनसमस्याओं के सिलसिले में जनप्रतिनिधियों का फोन उठाते हैं। इस गैर-जिम्मेदाराना रवैये से परेशान होकर उच्च अधिकारियों से उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग की गई है।

शीघ्र समाधान न होने पर आंदोलन की चेतावनी

जनप्रतिनिधियों ने चेतावनी दी है कि यदि लोक निर्माण विभाग ने सड़कों की त्वरित मरम्मत शुरू नहीं कराई और संबंधित अधिकारी के रवैये में सुधार नहीं हुआ, तो वे उग्र आंदोलन करने और विभाग के कार्यालय का घेराव करने को बाध्य होंगे।

मोहला-मानपुर-अम्बागढ़ चौकी: राजू टांडिया जिला भाजपा प्रवक्ता नियुक्त, कार्यकर्ताओं में हर्ष

अम्बागढ़ चौकी (दावा)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जिला मोहला-मानपुर, अम्बागढ़ चौकी के संगठनात्मक विस्तार के तहत नई नियुक्ति की गई है। पार्टी की राष्ट्रवादी विचारधारा, दीर्घकालीन निष्ठा, वरिष्ठता एवं कार्यकुशलता को ध्यान में रखते हुए राजू टांडिया उर्फ उमाकांत टांडिया को जिला प्रवक्ता के महत्वपूर्ण पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह नियुक्ति जिला भाजपा अध्यक्ष दिलीप वर्मा (अधिवक्ता) द्वारा आधिकारिक पत्र जारी कर की गई है। पत्र में विश्वास व्यक्त किया गया है कि राजू टांडिया के अनुभव, प्रखर वक्तृत्व और संगठनात्मक समझ का लाभ पार्टी को निरंतर मिलता रहेगा। वे संगठन के विचारों, नीतियों और जनहित के कार्यों को मीडिया तथा जनता के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करेंगे। जिलाध्यक्ष दिलीप वर्मा ने नवनियुक्त जिला प्रवक्ता को उनके सफल एवं प्रभावकारी कार्यकाल हेतु हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी हैं। इस नियुक्ति की प्रतिलिपि प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश संगठन महामंत्री, संभाग प्रभारी, जिला प्रभारी, जिला मीडिया प्रभारी तथा सभी मंडल अध्यक्षों को प्रेषित की गई है। राजू टांडिया को जिला प्रवक्ता बनाए जाने पर स्थानीय कार्यकर्ताओं और पार्टी पदाधिकारियों ने खुशी जताते हुए उन्हें बधाई दी है। यह जानकारी अविनाश त्रिपाठी भाजपा सोशल मीडिया जिला संयोजक ने दी।

सर्व आदिवासी समाज आज मनाएगा विश्व आदिवासी दिवस, नगर पंचायत अध्यक्ष को दिया आमंत्रण

गंडई-छुईखदान (दावा)। आज विश्व आदिवासी दिवस के पावन अवसर पर सर्व आदिवासी समाज द्वारा छुईखदान के केकती बाड़ी में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम को लेकर समाज के प्रतिनिधियों में खासा उत्साह देखा जा रहा है।

कार्यक्रम की तैयारियों के सिलसिले में शनिवार को सर्व आदिवासी समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने नगर पंचायत कार्यालय पहुंचकर नगर पंचायत अध्यक्ष लाल टारकेश्वर शाह खुशरो से सौजन्य मुलाकात की। प्रतिनिधियों ने उन्हें इस आयोजन में शामिल होने का औपचारिक निमंत्रण पत्र सौंपा।

इस अवसर पर सर्व आदिवासी समाज के जिला अध्यक्ष (केसीजी) संजय धुर्वा, जिला महासचिव संतोष नेताम, छुईखदान ब्लॉक अध्यक्ष संजीव धुर्वे, गंडई तहसील अध्यक्ष संतोष नेताम, शिवचरण खुशरो, लच्छू मेरावी, सुरेश भंडारी, गौकरण मेरावी सहित समाज के कई प्रमुख पदाधिकारी व प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

हरडुवा में ग्राम सभा आयोजित, विकास कार्यों की तैयार हुई रूपरेखा

घुमका (दावा)। ग्राम हरडुवा के पंचायत भवन में ग्राम सभा का आयोजन किया गया, जिसमें गांव के सर्वांगीण विकास के लिए कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। बैठक में सरपंच गंगेश्वर वर्मा, उपसरपंच डॉ. ऋषि वर्मा, मीडिया प्रभारी तोषण सिन्हा, रोहित वर्मा, डेरहा वर्मा, भूपेंद्र वर्मा, बिनेश वर्मा, सागर वर्मा, धर्मेंद्र वर्मा, जीवराखन, गिरिश चंदेल, रोजगार सहायक, सचिव एवं ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

बैठक की जानकारी देते हुए रोहित वर्मा ने बताया कि सरपंच गंगेश्वर वर्मा की पहल पर गांव की आवश्यकतानुसार प्रत्येक वार्ड में नाली निर्माण, आरसीसी रोड तथा विभिन्न मार्गों पर मुरुमीकरण कराने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। इन विकास कार्यों को शीघ्र स्वीकृति दिलाकर धरातल पर उतारने के लिए संबंधित उच्च अधिकारियों को प्रस्ताव भेजा जाएगा।

ग्राम सभा के दौरान सरपंच के इस प्रयास की सराहना करते हुए ग्रामीणों ने कहा कि राज्य व केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को गांव तक पहुंचाना और विकास को नई ऊंचाई देना ही प्राथमिकता है। सरपंच की इस विकासपरक सोच और गांव के प्रति समर्पण से ग्रामीणों में हर्ष व्याप्त है।

भाजपा मंडल छुरिया की मासिक बैठक संपन्न, तिरंगा यात्रा की बनी रूपरेखा

वरिष्ठ भाजपा नेता श्री अमीर खान का शाल-श्रीफल से किया सम्मान, मंडल पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधि रहे मौजूद

छुरिया। भारतीय जनता पार्टी मंडल छुरिया की मासिक बैठक शनिवार को आयोजित की गई। बैठक में संगठनात्मक गतिविधियों सहित आगामी कार्यक्रमों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। इस दौरान देशभक्ति और राष्ट्र सम्मान के प्रतीक तिरंगा यात्रा को लेकर विशेष रूप से चर्चा करते हुए इसकी रूपरेखा तैयार की गई।

बैठक में तिरंगा यात्रा जिला सह संयोजक संजय सिन्हा ने तिरंगा यात्रा को सफल एवं भव्य बनाने को लेकर आवश्यक तैयारियों, कार्यकर्ताओं की सहभागिता तथा कार्यक्रम की व्यवस्थाओं पर विचार-विमर्श किया। कार्यकर्ताओं ने तिरंगा यात्रा में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा कार्यक्रम को गरिमामय ढंग से संपन्न कराने पर जोर दिया।

इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता अमीर खान का मंडल पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा शाल एवं श्रीफल भेंटकर सम्मान किया गया। कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत करते हुए संगठन के प्रति उनके योगदान एवं मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। मासिक बैठक में छुरिया मंडल के आसपास के विभिन्न ग्रामों से पहुंचे भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक के दौरान पूर्व जिला महामंत्री रविन्द्र वैष्णव ने संगठन को बूथ स्तर तक और अधिक मजबूत बनाने, आगामी कार्यक्रमों में कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने तथा पार्टी की गतिविधियों को गांव-गांव तक पहुंचाने को लेकर भी चर्चा की गई।

भाजपा मंडल अध्यक्ष कांता साहू ने कहा कि संगठन की मजबूती कार्यकर्ताओं की सक्रियता और आपसी समन्वय से ही संभव है। आगामी तिरंगा यात्रा को लेकर कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। बैठक के अंत में सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लिया। उक्त कार्यक्रम का सफल संचालन तिरंगा यात्रा मंडल संयोजक एवं मंडल महामंत्री अशोक मरकाम ने की।

शोक संतप्त परिवार को सहायता देने पहुँचे साहू समाज

डोंगरगांव (दावा)। सड़क दुर्घटना में आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर मृतक सुरेश साहू पिता फेरूराम साहू उम्र लगभग 54वर्ष निवासी जामसरार खुर्द के परिवार वालों को साहू समाज ने आर्थिक सहायता प्रदान किया है। अधिकारी कर्मचारी प्रकोष्ठ जिला सचिव परदेशी राम साहू ने बताया कि मृतक सुरेश साहू की धर्मपत्नी शारदा साहू एवं उनके परिवार को प्रदेश अध्यक्ष डॉ नीरेंद्र साहू, जिला साहू संघ राजनांदगांव अध्यक्ष नोबल साहू, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मदन साहू, जिला महामंत्री नीलमणि साहू, संगठन सचिव माधव साहू,जनपद सदस्य टीमेश साहू, लाल बहादुर नगर पंचायत अध्यक्ष देवेंद्र साहू, परिक्षेत्र अध्यक्ष हेमंत साहू, ग्रामीण अध्यक्ष मनोहर साहू, भगवानदास, रामबिलास साहू, कोमल साहू, धन्नूलाल साहू, डायमंड साहू,ज्ञानचंद साहू, खेमचंद साहू, हेमचंद साहू आदि ने उनके घर पहुंचकर शोक संतप्त परिवार को सहायता दी।

बिना टिकट यात्रा के विरुद्ध राजनांदगांव स्टेशन में चला 'नाका टिकट चेकिंग अभियान

312 मामलों में कार्रवाई, 1 लाख 59 हजार रुपये से अधिक की वसूली

डोंगरगढ़ (दावा)। रेलवे राजस्व की सुरक्षा, यात्रियों में टिकट लेकर यात्रा करने की आदत को प्रोत्साहित करने तथा बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से बिलासपुर मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर निरंतर टिकट चेकिंग अभियान÷ चलाया जा रहा है ।

इसी क्रम में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री दिलीप सिंह के मार्गदर्शन में 7 अगस्त 2026 को राजनांदगांव स्टेशन में नाका टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। जिसमें सहायक वाणिज्य प्रबंधक श्री अरविंद साव, मुख्य टिकट निरीक्षक 07, टीटीई 22 एवं एम टी एस स्टाफ 10 शामिल थे।

इस अभियान के दौरान राजनांदगांव स्टेशन एवं यहाँ से गुजरने वाली 16 ट्रेनों की सघन जांच कर कुल 312 मामलों से कुल 15,91,05 रुपये का जुर्माना वसूला गया। जिसमें बिना टिकट यात्रा के 156 मामलों से 01 लाख 11 हजार 770 रुपये, अनियमित टिकट के 53 मामलों से 47 हजार 210 रुपये तथा बिना बुक किए गए लगेज के 123 मामलों से 12 हजार 830 रुपये जुर्माना शामिल है।

रेल प्रशासन यात्रियों से अपील करता है कि वे यात्रा प्रारंभ करने से पूर्व उचित यात्रा टिकट अवश्य लें तथा स्टेशन परिसर में प्रवेश हेतु प्लेटफॉर्म टिकट खरीदें। साथ ही रेलगाड़ी एवं रेलवे परिसर को स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग करें तथा गंदगी फैलाने एवं धूम्रपान जैसी गतिविधियों से बचें।

वॉर्म-अप मैच में खुल गई बांग्लादेश की पोल, 54 रनों पर सिमटी पूरी टीम, मिली करारी हार

नई दिल्ली। बांग्लादेश की टीम इन दिनों दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है। टेस्ट सीरीज के शुरू होने से पहले ही बांग्लादेशी टीम की खराब बैटिंग की पोल खुल गई और उनको एक करारी हार का सामना करना पड़ा है। डार्विन में खेले गए वॉर्म-अप मैच में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ङ्कढ्ढ ने बांग्लादेश को पारी और 38 रनों से हरा दिया है। इस मुकाबले की दूसरी पारी में बांग्लादेश के बल्लेबाजों ने घुटने टेक दिए और पूरी टीम सिर्फ 54 रनों पर ऑलआउट हो गई। इसी वजह से बांग्लादेशी टीम को एक बड़ी हार का सामना करना पड़ा है।

मेहदी हसन मिराज ने बांग्लादेश के लिए पहली पारी में लगाया था शतक

इस मैच की पहली पारी में मेहदी हसन मिराज के नाबाद शतक की बदौलत बांग्लादेश ने 263 रन बनाए थे। जवाब में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ङ्कढ्ढ की टीम ने तेग वायली के 130 रनों के शानदार शतक के दम पर पहली पारी में 355 रन बनाकर 92 रनों की बड़ी बढ़त हासिल कर ली। इस बढ़त के दबाव में जब बांग्लादेशी टीम अपनी दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने आई, तब उनके बल्लेबाज शुरुआत से ही नर्वस दिखे। इस दौरान कोई भी बल्लेबाज क्रीज पर टिक कर बड़ी पारी नहीं खेल पाया।

22 ओवर में ही सिमट गई बांग्लादेश की पारी

दूसरी पारी में बांग्लादेश के खराब बल्लेबाजी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सलामी बल्लेबाज तंजीद हसन के अलावा कोई भी खिलाड़ी 10 रन का आंकड़ा भी पार नहीं कर सका। लगातार विकेट गिरने के कारण पूरी बांग्लादेशी टीम 22 ओवर में महज 54 रनों पर ही सिमट गई। इस पारी में तंजीद हसन ने सबसे ज्यादा 22 रन बनाए। बांग्लादेशी टीम को जल्दी आउट करने में 22 साल के युवा गेंदबाज कैम्पबेल थॉम्पसन ने अहम भूमिका निभाई, जिन्होंने बांग्लादेश के बल्लेबाजी क्रम को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

थॉम्पसन और रोचिचिओली ने गेंदबाजी में किया कमाल

दूसरी पारी में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ङ्कढ्ढ की गेंदबाजी की बात करें तो वहां थॉम्पसन ने 11 ओवर में 25 रन खर्च करते हुए 8 खिलाड़ियों को पवेलियन का रास्ता दिखाया। इस दौरान उन्होंने दो मेडन ओवर डाले। रोचिचिओली के खाते में बाकी के दो विकेट आए।

टेस्ट सीरीज से पहले लगा झटका, भारतीय टीम से साई सुदर्शन हुए बाहर

नई दिल्ली। भारतीय टीम अभी श्रीलंका के दौरे पर है जहां उसे मेजबान के खिलाफ 15 अगस्त से दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। बीसीसीआई की तरफ से टेस्ट सीरीज को लेकर स्क्वाड का ऐलान काफी पहले कर दिया गया था, जिसमें अनफिट खिलाड़ी साई सुदर्शन का नाम भी शामिल था। सुदर्शन को लेकर ऐसी उम्मीद जताई गई थी कि वह टेस्ट सीरीज के शुरू होने से पहले फिट हो जाएंगे, लेकिन अब वह पूरी टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए हैं, जो टीम इंडिया के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है। सुदर्शन इस दौरे से बाहर होने वाले दूसरे खिलाड़ी हैं जिसमें इससे पहले जसप्रीत बुमराह भी पूरी तरह से फिट नहीं होने की वजह से बाहर हो गए थे।

श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के स्क्वाड का ऐलान होने से पहले ही सुदर्शन दाएं पैर के अंगूठे में लगी चोट से जूझ रहे थे, जिसमें उनके सीरीज के शुरू होने से पहले पूरी तरह से फिट होने की उम्मीद जताई गई थी। सुदर्शन के टेस्ट सीरीज से बाहर होने को लेकर समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार सुदर्शन अभी बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में चोट से उबरने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। सुदर्शन की चोट पर निगरानी रख रही बीसीसीआई की मेडिकल साइंस टीम के अपडेट के अनुसार साई सुदर्शन श्रीलंका के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज में नहीं खेल पाएंगे। डॉक्टरों ने उन्हें पूरी तरह फिट होने के लिए और समय देने की सलाह दी है। उनकी स्थिति में काफी सुधार हुआ है, लेकिन अभी टेस्ट क्रिकेट में वापसी के लिए पूरी तरह फिट नहीं हैं। मेडिकल साइंस टीम ने सुदर्शन की फिटनेस को लेकर नेशनल सिलेक्शन कमेटी को अपडेट दे दिया है।

कांग्रेस ने कलेक्टर से की जांच की मांग : 29 लाख की सीसी सड़क पर सियासत तेज, कार्रवाई न होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी

खैरागढ़ (दावा)। शहर के इतवारी बाजार स्थित रावणभाठा में लगभग 29 लाख रुपये की लागत से निर्माणाधीन सीसी सड़क को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। नगर पालिका की प्रारंभिक जांच में निर्माण कार्य को मानकों के अनुरूप बताए जाने के बाद, अब शहर कांग्रेस कमेटी ने मामले की शिकायत कलेक्टर से करते हुए किसी स्वतंत्र एजेंसी से तकनीकी जांच कराने की मांग की है। कांग्रेस नेताओं ने चेतावनी दी है कि यदि निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई नहीं की गई, तो उग्र आंदोलन किया जाएगा।

ठेकेदार और पालिका प्रशासन के बीच मिलीभगत का आरोप, भाजपा बोली- विकास कार्यों को रोकने रचा जा रहा प्रपंच

अपर कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन, मानकों की अनदेखी का आरोप

शहर कांग्रेस नेताओं ने कलेक्टर के नाम अपर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपते हुए आरोप लगाया कि सड़क निर्माण में टेंडर एवं प्राक्कलन (एस्टिमेट) के अनुसार तकनीकी मानकों का पालन नहीं किया जा रहा है। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि निर्धारित मोटाई में जीएसबी (ग्रेन्युलर सब-बेस) बिछाकर रोलर से समतलीकरण करने के बजाय केवल नाममात्र की बारीक गिट्टी डालकर औपचारिकता निभाई जा रही है। Base निर्माण सही न होने से सड़क की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। कांग्रेस नेताओं ने ध्यान दिलाया कि रावणभाठा शहर का सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है, जहां हर वर्ष भारी जलभराव होता है। ऐसे में यदि घटिया निर्माण हुआ, तो सड़क जल्द ही क्षतिग्रस्त हो जाएगी और शासकीय धन की भारी हानि होगी।

शिकायत के बावजूद शुरू कराया गया काम

शहर कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अरुण भारद्वाज ने कहा, 'रावणभाठा में बन रही सड़क पूरी तरह भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रही है। इसकी शिकायत मैं पहले ही संयुक्त संचालक (नगरीय प्रशासन दुर्ग) और निदेशक (रायपुर) से कर चुका हूँ। अब कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर स्वतंत्र एजेंसी से निष्पक्ष जांच की मांग की गई है।'

वहीं विधायक प्रतिनिधि मनराखन देवांगन ने बताया कि कांग्रेस नेताओं के निरीक्षण के बाद सीएमओ को पत्र लिखकर काम रोकने की मांग की गई थी। निर्माण कार्य रोका भी गया, लेकिन बिना किसी तकनीकी जांच के दोबारा शुरू करा दिया गया, जिसके विरोध में आज ज्ञापन सौंपा गया है।

भाजपा का पलटवार: विकास रोकने खड़ा किया जा रहा विवाद

दूसरी ओर, सत्तारूढ़ भाजपा ने कांग्रेस के आरोपों को राजनीतिक से प्रेरित बताया है। भाजपा नेताओं का कहना है कि शहर में हो रहे विकास कार्यों को अवरुद्ध करने के उद्देश्य से कांग्रेस बेवजह विवाद खड़ा कर रही है, जबकि नगर पालिका प्रशासन प्रारंभिक जांच में कार्य को मानकों के अनुरूप बता चुका है।

ज्ञानेश्वरी यादव का सम्मान, जिले को गौरव बढ़ाया

कॉमनवेल्थ में रजत जीतने पर निज निवास पहुंचकर किया सम्मानित

राजनांदगांव (दावा)। कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 की वेटलिफ्टिंग स्पर्धा में रजत पदक जीतकर देश, छत्तीसगढ़ और राजनांदगांव का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन करने वाली प्रतिभाशाली खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी यादव का उनके निज निवास पर पहुंचकर आत्मीय सम्मान किया गया। उनकी इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर जिलेवासियों ने गर्व व्यक्त करते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अपने नाम करने वाली राजनांदगांव की होनहार बेटी ज्ञानेश्वरी यादव आज पूरे देश के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। उनकी इस ऐतिहासिक सफलता ने न केवल भारत बल्कि छत्तीसगढ़ और संस्कारधानी राजनांदगांव को भी वैश्विक खेल मंच पर नई पहचान दिलाई है। ज्ञानेश्वरी यादव की इस उपलब्धि पर उनके निज निवास पहुंचकर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान अतिथियों ने उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया तथा विशेष रूप से तैयार किया गया स्मृति-चिन्ह (फ्रेम) प्रदान करते हुए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। उपस्थित लोगों ने कहा कि ज्ञानेश्वरी ने कठिन परिश्रम, अनुशासन और लगन के बल पर यह मुकाम हासिल किया है जो जिले के युवाओं और खेल प्रतिभाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। सम्मान समारोह में वक्ताओं ने विश्वास व्यक्त किया कि ज्ञानेश्वरी यादव भविष्य में भी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश के लिए स्वर्णिम सफलता अर्जित करेंगी और भारत का तिरंगा विश्व मंच पर और अधिक ऊंचा लहराएंगी।

संत गुरु रविदास जी के समरसता संदेश को जन-जन तक पहुंचाने भाजपा का संकल्प अभियान प्रारंभ

राजनांदगांव (दावा)। संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के पावन अवसर पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा समरसता संकल्प अभियान का शुभारंभ 29 जुलाई (गुरु पूर्णिमा) से किया गया है। जो 20 फरवरी 2027 (संत रविदास जयंती) तक निरंतर संचालित होगा। इसी क्रम में भाजपा जिला कार्यालय, राजनांदगांव में संत गुरु रविदास जी के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन एवं पूजन कर अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर उपस्थित भाजपा पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने संत रविदास जी के समरसता, समानता, सामाजिक न्याय, प्रेम और भाईचारे के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

भाजपा कार्यालय राजनांदगांव में हुआ स्वागत एवं पूजन

टेड़ेसरा में कलश यात्रा के स्वागत के लिए पहुंचे भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष कोमल सिंह राजपूत ने कहा कि संत गुरु रविदास जी का जीवन समाज में व्याप्त ऊँच-नीच और भेदभाव के विरुद्ध समता एवं मानवता का प्रेरक संदेश देता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा संतों और महापुरुषों के विचारों को समाज तक पहुँचाने तथा सामाजिक समरसता को मजबूत करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। छत्तीसगढ़ में आयोजित भव्य कलश यात्राओं में हजारों श्रद्धालुओं, मातृशक्ति एवं युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर गुरु रविदास जी के सामाजिक सद्भाव के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डिगेश साहू, संदीप भट्टाचार्य, विजय राँय, योगराज जगने, त्रिगुण टांक, रवि सिन्हा, दीपेश शेंडे, कबीर साहू, साकेत, करण कोसरे, अंकित गढ़वाल, रिभय यादव, रवि बंजारे, मनीष श्रीवास्तव, राजकमल ध्रुव, महेश मोहबे, कृष्णा तिवारी सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन संत गुरु रविदास जी के आदर्शों पर चलने तथा सामाजिक समरसता, एकता एवं सद्भाव को सशक्त बनाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

राष्ट्रमंडल पदक विजेता ज्ञानेश्वरी यादव का प्रदेश अध्यक्ष रमेश यदु ने किया भव्य अभिनंदन

सर्व यादव समाज एवं सर्व समाज छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष रमेश यदु पहुँचे ज्ञानेश्वरी यादव के गृह निवास

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रमंडल खेल 2026 में भारोत्तोलन स्पर्धा में भारत के लिए रजत पदक जीतकर देश, प्रदेश और यदुवंशी समाज का नाम संपूर्ण विश्व में रोशन करने वाली राजनांदगांव की माटी की बेटी ज्ञानेश्वरी यादव के निवास स्थान पहुँचकर समाज की ओर से उनका भव्य नागरिक अभिनंदन किया गया। सर्व यादव समाज छत्तीसगढ़ एवं सर्व समाज छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष रमेश यदु ने अपनी वरिष्ठ सामाजिक टीम एवं युवा मंच के प्रतिनिधियों के साथ ज्ञानेश्वरी यादव के गृह-निवास पहुँचकर उन्हें पुष्पगुच्छ, शॉल एवं स्मृति-चिह्न भेंटकर उनका आत्मीय सम्मान व अभिनंदन किया।

इस गौरवमयी अवसर पर सर्व समाज एवं सर्व यादव समाज के प्रदेश अध्यक्ष रमेश यदु ने खिलाड़ी ज्ञानेश्वरी यादव को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि ज्ञानेश्वरी ने अपनी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और प्रतिभा के बल पर अंतरराष्ट्रीय खेल पटल पर जो इतिहास रचा है, वह न केवल राजनांदगांव बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ प्रदेश और हमारे यदुवंशी समाज के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। आपकी यह स्वर्णिम यात्रा शहर और प्रदेश के हजारों युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इसके साथ ही उन्होंने बेटी की इस अभूतपूर्व उपलब्धि से पूरे समाज को गौरवान्वित करने हेतु उनके प्रति सहृदय आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया।

अभिनंदन समारोह के दौरान सर्व यादव समाज राजनांदगांव के वरिष्ठ जन हरीश यादव, उपेंद्र यादव, विनोद (बंटी) यादव, दुर्गेश यादव, दुर्गा प्रसाद यादव प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

प्रथम पृष्ठ का शेष....

लोकसभा में आज लाए जाएंगे चार बड़े बिल,

पेश करेंगे. इस विधेयक का उद्देश्य सहकारिता क्षेत्र को अधिक वित्तीय ताकत देना है. इसके लागू होने के बाद प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) और अन्य सहकारी संस्थाओं को सीधे ऋण और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का रास्ता आसान हो जाएगा.

ट्रिब्यूनलों में सुधार की तैयारी

कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ट्रिब्यूनल सुधार विधेयक, 2026 पेश करेंगे. इस विधेयक का मकसद विभिन्न ट्रिब्यूनलों की कार्यप्रणाली को सरल और अधिक प्रभावी बनाना है. इसके तहत अध्यक्षों और सदस्यों की नियुक्ति, चयन प्रक्रिया तथा कार्यकाल में पारदर्शिता और एकरूपता लाने के प्रावधान किए गए हैं.

मोदी ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से फोन पर की बात,

उन्हें और सेकंड लेडी को गर्मजोशी से बधाई दी और पूरे परिवार को शुभकामनाएं दीं. प्रधानमंत्री दफ्तर के मुताबिक, पीएम मोदी ने उपराष्ट्रपति वेंस और सुश्री उषा वेंस को उनके बेटे के जन्म पर हार्दिक बधाई दी. प्रधानमंत्री और उपराष्ट्रपति वेंस ने उच्च-स्तरीय बातचीत में बनी निरंतर गति का उल्लेख किया और व्यापार, रक्षा, महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों, ऊर्जा सुरक्षा तथा महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्रों में सहयोग को और मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई.

अग्र अलंकरण के लिए 18 क्षेत्रों के योग्य प्रतिभागियों से आवेदन आमंत्रित

19-20 सितंबर को अंबिकापुर में आयोजित भव्य समारोह में सम्मानित होंगे प्रतिभागी

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन का प्रांतीय अधिवेशन एवं दशम 'अग्र अलंकरण समारोह' आगामी 19 एवं 20 सितंबर को अग्रवाल सभा अंबिकापुर एवं सरगुजा संभागीय अग्रवाल सभा के आतिथ्य में अंबिकापुर में आयोजित किया जाएगा। इस प्रांतीय समारोह में विभिन्न 18 क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को अग्र अलंकरण पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। संगठन के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष व प्रमुख संरक्षक सियाराम अग्रवाल, संरक्षक महेंद्र सेकसरिया व जयदेव सिंघल, प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. अशोक अग्रवाल, प्रांतीय चेयरमैन अशोक मोदी, प्रांतीय कार्यकारी अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल 'राजू' व सुनील रामदास अग्रवाल, प्रांतीय महिला अध्यक्ष डॉ. अनीता मोहनलाल अग्रवाल, युवा अध्यक्ष आशीष सेकसरिया तथा अग्र अलंकरण टीम के संयोजक ललित अग्रवाल (जगदलपुर), सह संयोजक पंकज अग्रवाल, विजय गोयल (रायपुर) एवं वर्षा अग्रवाल (अंबिकापुर) के नेतृत्व में आयोजन की व्यापक तैयारियां की जा रही हैं।

31 अगस्त तक जमा कर सकते हैं आवेदन

1 जुलाई 2025 से 30 जून 2026 तक के सत्र में 18 निर्धारित क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले समाज के प्रतिभावान व्यक्तियों से आवेदन मंगाए गए हैं। योग्य प्रतिभागी अपना विस्तृत विवरण निर्धारित प्रपत्र में 31 अगस्त 2026 तक प्रांतीय कार्यालय-छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन, हनुमान मार्केट, रामसागर पारा, रायपुर में जमा कर सकते हैं।

11,000 रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह

प्रांतीय महामंत्री संजय अग्रवाल, उपाध्यक्ष अशोक लोहिया, कोषाध्यक्ष पंकज किरतुका, अग्रवाल सभा अंबिकापुर के अध्यक्ष संजय मित्तल तथा सरगुजा संभागीय अग्रवाल सभा के अध्यक्ष पवन अग्रवाल ने बताया कि चयनित प्रत्येक प्रतिभागी को मुख्य व विशिष्ट अतिथियों द्वारा 11,000 रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह एवं उत्कृष्ट उपाधि प्रदान की जाएगी।

अग्रदीप पुरस्कार हेतु पीएचडी या पोस्ट ग्रेजुएशन में गोल्ड मेडल प्राप्त करने पर, अग्र गौरव पुरस्कार : यूपीएससी (आईएएस/ आईपीएस/ आईएफएस/ आईआरएस) चयन में श्रेष्ठ प्रदर्शन पर, अग्र भूषण पुरस्कार : समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हेतु, अग्र दानी पुरस्कार : अस्पताल, धर्मशाला, गौशाला आदि का निर्माण कार्य पूरा करने पर, अग्र सृजन पुरस्कार : उत्कृष्ट स्टार्टअप एवं उद्यमिता के क्षेत्र में, अग्र शिरोमणि पुरस्कार : समाज सेवा में जीवनपर्यंत (लाइफटाइम) योगदान हेतु, अग्रश्री पुरस्कार : सीजीपीएससी परीक्षा में उत्कृष्ट चयन पर, अग्र धनवंतरी पुरस्कार : स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा क्षेत्र में अमूल्य योगदान पर, अग्र पुंज पुरस्कार : कक्षा 12वीं की प्रावीण्य सूची (मेरिट लिस्ट) में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर, अग्र मित्र पुरस्कार : पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर, अग्र प्रखर पुरस्कारः राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर, अग्र विशारद पुरस्कार : नृत्य एवं संगीत के क्षेत्र में प्रांतीय/राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धि पर, अग्र विभूति पुरस्कार : सामाजिक प्रकाशन, पत्रिका, खोजी पत्रकारिता या मीडिया में श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु, अग्र श्रेष्ठ पुरस्कार : खेलकूद के क्षेत्र में प्रांतीय या राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन पर, अग्र ज्योति पुरस्कार : महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य पर, अग्र रत्न पुरस्कार : कला, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन पर, अग्र उद्यमी पुरस्कार : उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में मुकाम हासिल करने पर, अग्र संस्था पुरस्कार : उत्कृष्ट सेवा व पहचान बनाने वाली अग्रवाल संस्था को दिया जाएगा। अग्र अलंकरण टीम ने समाज की योग्य प्रतिभाओं से 31 अगस्त तक निर्धारित समय-सीमा में आवेदन प्रेषित करने की अपील की है।

छुट्टे मवेशियों पर सरकार की कोई ठोस योजना नहीं -भागवत साहू

राजनांदगांव(दावा)। शहर जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण के पूर्व अध्यक्ष भागवत साहू ने छुट्टे मवेशियों की समस्या को लेकर भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश में सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर लगातार बढ़ रही छुट्टे मवेशियों की समस्या के समाधान के लिए सरकार के पास कोई ठोस और प्रभावी योजना नहीं है। इसके कारण ग्रामीण किसान, व्यापारी, वाहन चालक और राहगीर सभी परेशान हैं। मवेशियों के कारण जहां किसानों की फसलों को नुकसान हो रहा है, वहीं सड़क हादसों का खतरा भी लगातार बढ़ रहा है।

श्री साहू ने कहा कि गौवंश ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। जिस गौवंश के माध्यम से किसानों और ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है उसी गौवंश की उपेक्षा के कारण आज किसान और आम जनता परेशान हो रही है। उन्होंने कहा कि छुट्टे मवेशियों के झुंड खेतों में पहुंचकर फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। किसान दिन-रात मेहनत कर फसल तैयार करता है लेकिन मवेशियों के खेत में घुसने से उसकी मेहनत और लागत दोनों प्रभावित हो रही हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में गौवंश के संरक्षण और संवर्धन के लिए गौठान और रोका-छेका जैसी योजनाएं संचालित की गई थीं। इन योजनाओं का उद्देश्य पशुओं को सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराना और किसानों की फसलों को मवेशियों से होने वाले नुकसान से बचाना था। लेकिन भाजपा सरकार के सत्ता में आने के बाद इन योजनाओं को बंद कर दिया गया जिसका खामियाजा अब किसान और आम जनता भुगत रही है। श्री साहू ने कहा कि एक ओर हम गौ माता की पूजा और संरक्षण की बात करते हैं वहीं दूसरी ओर सड़कों पर बेसहारा घूम रहे गौवंश की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। उन्होंने कहा कि छुट्टे मवेशियों के कारण कई बार वाहन दुर्घटनाएं होती हैं जिससे मवेशियों के साथ-साथ इंसानों की जान भी खतरे में पड़ रही है। यह स्थिति सरकार की व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार इस गंभीर समस्या को लेकर गहरी नींद में सोई हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में किसान परेशान हैं शहरों में राहगीर और वाहन चालक परेशान हैं तथा व्यापारियों को भी अपने प्रतिष्ठानों के आसपास घूमते मवेशियों के कारण परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसके बावजूद सरकार की ओर से समस्या के स्थायी समाधान के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए पशुधन केवल पशु नहीं बल्कि उनकी आजीविका और आर्थिक मजबूती का आधार है। यदि गौवंश का उचित संरक्षण और प्रबंधन नहीं किया गया तो इसका सीधा असर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। सरकार को केवल बयानबाजी करने के बजाय जमीन पर ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे मवेशियों को सुरक्षित स्थान मिले और किसानों की फसल भी सुरक्षित रहे। श्री साहू ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के कांग्रेस शासनकाल में गौवंश के संरक्षण को लेकर कई योजनाएं शुरू की गई थीं। उनका उद्देश्य गौवंश की सुरक्षा के साथ-साथ किसानों को राहत देना भी था। उन्होंने भाजपा सरकार से मांग की कि बंद की गई योजनाओं की समीक्षा कर छुट्टे मवेशियों के लिए स्थायी व्यवस्था, पर्याप्त गौ-आश्रय स्थल और प्रभावी रोका-छेका व्यवस्था लागू की जाए।

उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों और आम जनता की समस्या को गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। जब तक छुट्टे मवेशियों के लिए स्थायी और प्रभावी व्यवस्था नहीं होगी तब तक किसानों की फसल, राहगीरों की सुरक्षा और गौवंश तीनों पर संकट बना रहेगा।

विभिन्न मांगों को लेकर सीतागोटा के किसानों में आक्रोश - विष्णु लोधी

स्मार्ट मीटर हटाने, बिजली बिल हाफ, 3286 में धान खरीदी, नल जल योजना, सिंचाई और सड़क निर्माण की मांग हुई तेज

डोंगरगढ़(दावा)।विकासखंड अंतर्गत डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र के ग्राम सीतागोटा में आयोजित जन संवाद कार्यक्रम के दौरान सचिव, जिला कांग्रेस कमेटी राजनांदगांव (ग्रामीण) विष्णु लोधी ने किसानों, मजदूरों, महिलाओं, युवाओं एवं ग्रामीण जनों से आत्मीय संवाद कर उनकी समस्याओं, सुझावों एवं मांगों को विस्तार से सुना। जन संवाद के दौरान किसानों ने कहा कि खेती की लागत लगातार बढ़ती जा रही है। खाद, बीज, डीजल एवं अन्य कृषि सामग्री के दाम बढ़ने से खेती करना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है। किसानों ने सरकार से खाद की कीमतों में कमी करने, पर्याप्त मात्रा में समय पर खाद उपलब्ध कराने तथा किसानों को खेती के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की मांग की।ग्रामीणों एवं किसानों ने स्मार्ट मीटर व्यवस्था को तत्काल समाप्त करने तथा बढ़ी हुई बिजली दरों को वापस लेने की मांग प्रमुखता से उठाई। ग्रामीणों ने कहा कि बढ़े हुए बिजली बिलों ने गरीब, किसान, मजदूर एवं मध्यमवर्गीय परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डाल दिया है।

विष्णु लोधी ने कहा कि यदि प्रदेशभर से स्मार्ट मीटर और बढ़े हुए बिजली बिलों की शिकायतें लगातार सामने आ रही हैं, तो सरकार को जनता की आवाज़ सुननी चाहिए। जनहित के विरुद्ध किसी भी व्यवस्था की समीक्षा कर आम उपभोक्ताओं को राहत देना सरकार का दायित्व है। किसानों ने सरकार से ?3,286 प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी सुनिश्चित करने तथा पिछले दो वर्षों में समर्थन मूल्य में घोषित बढ़ी हुई राशि का शीघ्र भुगतान करने की मांग की। किसानों का कहना था कि बढ़ती खेती लागत के बीच उचित मूल्य और लंबित राशि का भुगतान उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए आवश्यक है।

ग्राम सीतागोटा के किसानों ने कारीसरार बांध एवं बाघनदी बांध से लिफ्ट इरिगेशन योजना प्रारंभ कर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने की मांग प्रमुखता से रखी। किसानों ने कहा कि इस योजना के क्रियान्वयन से क्षेत्र की बड़ी कृषि भूमि सिंचित होगी, उत्पादन बढ़ेगा तथा किसानों की आय में वृद्धि होगी। इसके साथ ही ग्रामीणों ने सीतागोटा में अधूरी नल-जल योजना को शीघ्र पूरा करने, सीतागोटा से महाराष्ट्र सीमा तक सड़क निर्माण तथा सीतागोटा से कन्हारटोला तक पक्की सड़क निर्माण की मांग भी उठाई। ग्रामीणों ने कहा कि वर्षों से लंबित इन मांगों के कारण आवागमन, पेयजल एवं ग्रामीण विकास प्रभावित हो रहा है।

नशा मुक्त युवा-विकसित भारत संकल्प अभियान : कांफ्लुएंस कॉलेज के स्वयंसेवकों ने निकाली भव्य रैली, किया नुक्कड़ नाटक

राष्ट्रीय सेवा योजना और माय भारत के सहयोग से जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित शपथ ग्रहण समारोह के साथ पीएम मोदी के राष्ट्रव्यापी संबोधन का हुआ सीधा प्रसारण

राजनांदगांव (दावा)। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय तथा छत्तीसगढ़ शासन के उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार जिले में 'नशा मुक्त युवा-विकसित भारत संकल्प अभियान' का जिला स्तरीय आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना एवं माय भारत के सहयोग से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में कांफ्लुएंस कॉलेज के स्वयंसेवकों ने रैली का नेतृत्व किया और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशा मुक्ति का प्रभावी संदेश दिया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रव्यापी संबोधन का सीधा प्रसारण देखा-सुना गया तथा शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ।

शासकीय कमला देवी राठी कॉलेज से बसंतपुर तक निकली रैली

कार्यक्रम के तहत शासकीय कमला देवी राठी महाविद्यालय से महामाया चौक होते हुए बसंतपुर तक भव्य रैली निकाली गई, जिसमें सैकड़ों स्वयंसेवियों और छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। रैली के दौरान जगह-जगह नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर युवाओं ने नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराया।

100 सप्ताह तक चलेगा राष्ट्रव्यापी अभियान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संदेश में कहा कि नशा केवल व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की प्रगति को बाधित करता है। उन्होंने इसे 100 सप्ताह तक चलने वाला राष्ट्रव्यापी जनभागीदारी अभियान बताया, जिसके तहत हर रविवार खेल प्रतियोगिताएं, वॉकाथॉन, ध्यान सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम व नुक्कड़ नाटक आयोजित किए जाएंगे। इसमें माय भारत वॉलिंटियर्स, एन.एस.एस., शैक्षणिक संस्थान और 125 से अधिक आध्यात्मिक संगठन भाग लेंगे।

अतिथियों ने युवाओं को किया प्रेरित

शुभजीत डे (जिला युवा अधिकारी, माय भारत) ने कहा नशा मुक्ति ही विकसित भारत की नींव है और युवाओं को इसमें अग्रणी भूमिका निभानी होगी। डॉ. रचना पाण्डेय (प्राचार्य, कांफ्लुएंस कॉलेज) ने नशा मुक्त समाज से ही विकसित भारत का सपना साकार होगा, जिसमें युवाओं की जागरूकता सबसे महत्वपूर्ण है। प्रो. विजय मानिकपुरी (एसएसएस कार्यक्रम अधिकारी) ने इन्होंने उपस्थितजनों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाते हुए कहा कि नशा मुक्त भारत का संकल्प ही राष्ट्र निर्माण की दिशा में पहला कदम है।

विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा के प्रयासों से 56 करोड़ से अधिक के सड़क एवं सिंचाई कार्यों को मिली प्रशासकीय स्वीकृति

खैरागढ़ (दावा)। विधानसभा क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज हुई है। क्षेत्र की विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा के सतत प्रयासों एवं निरंतर अनुश्रवण के फलस्वरूप खैरागढ़ विधानसभा अंतर्गत 56 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाले विभिन्न सड़क, पुल-पुलिया, जंक्शन सुधार तथा सिंचाई परियोजनाओं को छत्तीसगढ़ शासन से प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त हुई है।

इन कार्यों के क्रियान्वयन से क्षेत्र में आधारभूत अधोसंरचना को नई मजबूती मिलेगी तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के नागरिकों को बेहतर आवागमन और सिंचाई सुविधाओं का लाभ मिलेगा। विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र की जनता की लंबे समय से चली आ रही आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन विकास कार्यों के प्रस्ताव शासन को भेजे गए थे। शासन द्वारा प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान किए जाने से अब इन कार्यों को शीघ्र धरातल पर उतारने का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से किसानों को अपनी उपज बाजार तक पहुंचाने में सुविधा होगी, विद्यार्थियों का आवागमन सुगम होगा, मरीजों को बेहतर सड़क संपर्क मिलेगा तथा सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से कृषि उत्पादन को भी नई गति मिलेगी। उन्होंने अधिकारियों को सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में उच्च गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराने के निर्देश दिए जाने की बात भी कही। प्रमुख स्वीकृत कार्य धनेली-देवारीभाट गौठान, बढ़ाईटोला मार्ग का चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण-रू.17.01 करोड़, भीमपुरी से बोरई पहुंच मार्ग-रू.4.75 करोड़, गर्रा-बांधटोला-कोहका झोरी मार्ग-रू.4.11 करोड़, राज्यमार्गों पर जंक्शन सुधार एवं क्रैश बैरियर निर्माण-रू.1.87 करोड़, करमतरा से घुमर्रा मार्ग -रू.3.75 करोड़, गंडई-पंडरिया व्याहा-दौजरी मार्ग (पुल-पुलिया सहित) -रू.4.77 करोड़, खैरागढ़ टाउन मार्ग (नाली सहित)-रू.4.69 करोड़, दाऊचौरा-खैरागढ़-ढारा मार्ग -रू.2.71 करोड़, कांशीटोला से ढाप मार्ग -रू.3.29 करोड़,कामठा से हरदी पहुंच मार्ग -रू.2.36 करोड़, विकासखंड छुईखदान की सूरही नदी पर एनीकट-कम-काजवे निर्माण-रू.10.13 करोड़, विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा ने इन महत्वपूर्ण विकास कार्यों की प्रशासकीय स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, लोक निर्माण मंत्री अरुण साव एवं जल संसाधन मंत्री केदार कश्यप के प्रति आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के विकासोन्मुखी दृष्टिकोण के कारण खैरागढ़ विधानसभा क्षेत्र में लगातार विकास कार्यों को स्वीकृति मिल रही है, जिससे क्षेत्र के सर्वांगीण विकास को नई गति मिलेगी। उन्होंने विधानसभा क्षेत्र की जनता को विश्वास दिलाया कि जनहित सर्वोपरि है और क्षेत्र के विकास, बुनियादी सुविधाओं के विस्तार तथा प्रत्येक गांव तक विकास की रोशनी पहुंचाने के लिए उनका प्रयास आगे भी निरंतर जारी रहेगा।

चातुर्मास पर्व पर ऐतिहासिक सद्गुरु कबीर मंदिर आश्रम पेंडरी में होगा आध्यात्मिक दिव्य सत्संग-भजन

स्वतंत्रता दिवस पर दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक आयोजित होगा कार्यक्रम

राजनांदगांव (दावा)। सुकुलदैहान के समीपस्थ ग्राम पेंडरी स्थित ऐतिहासिक सद्गुरु कबीर मंदिर आश्रम में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिला चातुर्मास आयोजन समिति एवं सद्गुरु कबीर सत्संग सेवायोग आश्रम समिति के संयुक्त तत्वावधान में आध्यात्मिक दिव्य सत्संग, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया जाएगा।

यह कार्यक्रम आगामी 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) को दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक संपन्न होगा। इस पावन अवसर पर महात्मा लेखचंद साहेब (ज्योति कुंज मुरमुंदा, कुम्हारी-दुर्ग) और पेंडरी आश्रम के वयोवृद्ध गादीपति महंत श्री सेवादास साहेब सहित अनेक संत-महापुरुष एवं भजन मंडलियां उपस्थित रहेंगी। इस आयोजन के प्रमुख प्रेरणास्त्रोत एवं संरक्षक वरिष्ठ समाजसेवी गुलाब वर्मा, अध्यक्ष नरबद वर्मा तथा उपाध्यक्ष वी.पी. वर्मा के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम विगत कई वर्षों से सफलतापूर्वक आयोजित होता आ रहा है।

चातुर्मास पर्व का विशेष महत्व

आषाढ़ शुक्ल पक्ष देवशयनी एकादशी से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल पक्ष देवउठनी एकादशी तक चलने वाले चातुर्मास में संतों के सानिध्य में सत्संग, भजन और सुमिरन करने का विशेष धार्मिक महत्व माना गया है। इस वृहद आयोजन की तैयारियों में मंथीरदास साहू, हेमंत साहू, सुजाता साहू, तुलसी राम साहू, धरमराज साहू, फकीरा राम साहू, चेतन दास साहू, संतोष कुमार देवांगन, मदनमोहन साहू (अध्यक्ष, तहसील साहू संघ डोंगरगढ़), भागवत दीवान, हमीर दास साहू, देवी दास साहू, नारायण साहू, बालक दास साहू, नरोत्तम दास साहू, मोरध्वज सिन्हा, जागेश्वर सिन्हा, मोतीलाल सिन्हा, नेतराम साहू (ग्राम पटेल), गोरख दास साहू, रामखिलावन साहू, दुर्गेश कुमार साहू एवं हिरेंद्र साहू सहित अनेक गणमान्य नागरिकों का विशेष सहयोग बना हुआ है।

जिला कोसरिया यादव महासभा द्वारा रजत पदक विजेता ज्ञानेश्वरी यादव एवं उनके पिता दीपक यादव का सम्मान

राजनांदगांव (दावा)। आज 7 अगस्त दिन शुक्रवार को जिला कोसरिया यादव महासभा द्वारा माननीय जिला अध्यक्ष कंसू राम यादव एवं समस्त जिला पदाधिकारी सर्किल पदाधिकारी महिला मंडल, युवा मंडल के द्वारा अंतरराष्ट्रीय वेटलिफ्टर यादव समाज की बेटी ज्ञानेश्वरी यादव जी के नगर आगमन पर जिला मुख्यालय सामाजिक भवन कौरिनभाठा में भव्य सम्मान सत्कार किया गया एवं आगे बढ़े ऐसी उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

इस अवसर पर स्कॉटलैंड में आयोजित कॉमन वेल्थ गेम प्रतियोगिता में रजत पदक विजेता ज्ञानेश्वरी यादव ने कहा कि यादव समाज का साथ हमेशा मुझे मिला है एवं भगवान श्री कृष्ण के आशीर्वाद से मैं आगे भी अच्छे से अच्छा कड़ी मेहनत कर मैं आगे होने वाले प्रतिस्पर्धा में अच्छा प्रदर्शन कर छत्तीसगढ़ एवं यादव समाज को गौरवान्वित करूंगी। यह जानकारी जिला कोसरिया यादव महासभा समाज के महामंत्री महेश कुमार यादव द्वारा दी गई है।

खैरागढ़-छुईखदान, गंडई जिला पंचायत की सामान्य सभा में जिला के विकास कार्यों की समीक्षा की गई

16वें वित्त आयोग की जिला पंचायत विकास योजना को मिली मंजूरी

खैरागढ़ (दावा)। जिला पंचायत खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई की सामान्य सभा की बैठक गुरुवार को जिला पंचायत कार्यालय स्थित मैकाल सदन सभा कक्ष में जिला पंचायत अध्यक्ष प्रियंका खम्हन ताम्रकार की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में जिले के समग्र विकास, जनहितकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तथा विभागीय कार्यों की प्रगति पर विस्तार से चर्चा करते हुए अधिकारियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

बैठक में जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह, सदस्यगण अरुणा राजू सिंह, हेमलता मण्डावी, भुनेश्वरी जीवन देवांगन, जमुना नरेश कुर्रे, दिनेश वर्मा, ललित चोपड़ा, निर्मला विजय वर्मा एवं सुश्री शताक्षी देवव्रत सिंह उपस्थित रहे। इसके अलावा मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रेम कुमार पटेल, उप संचालक पंचायत गीत कुमार सिन्हा, सांसद प्रतिनिधि खम्हन ताम्रकार, जनपद पंचायत खैरागढ़ की अध्यक्ष राजेश्री त्रिपाठी, जनपद पंचायत छुईखदान की अध्यक्ष पुष्पा प्रकाश वर्मा, विधायक खैरागढ़ एवं डोंगरगढ़ के प्रतिनिधियों सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सहकारिता, मछली पालन, वन, विद्युत, लोक निर्माण एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग सहित विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं विकास कार्यों की विभागवार समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान जनप्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्रों से जुड़े जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हुए अधिकारियों से त्वरित समाधान सुनिश्चित करने की अपेक्षा व्यक्त की।

सदस्यों ने विकास कार्यों की प्राथमिकताओं पर अपने सुझाव दिए, जिसके उपरांत योजना का अनुमोदन किया गया।। शिक्षा विभाग की समीक्षा के दौरान जर्जर एवं अपूर्ण विद्यालय भवनों, शिक्षकविहीन विद्यालयों तथा एकल शिक्षक वाले स्कूलों का विषय प्रमुखता से उठा।

जनप्रतिनिधियों ने शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने तथा रिक्त पदों की पूर्ति के लिए आवश्यक पहल करने पर जोर दिया। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की समीक्षा में जल जीवन मिशन एवं नल-जल योजनाओं के तहत निर्माणाधीन पेयजल टंकियों, अधूरे कार्यों, गुणवत्ता, लंबित भुगतान, योजनाओं को ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित करने, उनके संधारण तथा जलकर व्यवस्था को प्रभावी बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई।

विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना तथा विद्युत उपभोक्ताओं से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत पुल एवं पुलिया निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई। वहीं कृषि एवं सहकारिता विभाग की समीक्षा में किसानों को समय पर पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया गया। बैठक में कोपरो, रामपुर एवं कुम्हरवाड़ा में निर्माणाधीन छात्रावासों की गुणवत्ता एवं कार्य प्रगति की भी समीक्षा की गई तथा संबंधित अधिकारियों को गुणवत्ता मानकों का कड़ाई से पालन करते हुए निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिए गए। बैठक के दौरान सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने तथा विकास कार्यों में गुणवत्ता एवं पारदर्शिता बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया। विभिन्न विभागों की समीक्षा पूर्ण होने के पश्चात जिला पंचायत अध्यक्ष की अनुमति से मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रेम कुमार पटेल ने सभी जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए बैठक समाप्ति की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ज्ञान प्रोत्साहन योजना : पंजीयन एवं सत्यापन के लिए 30 अगस्त तक पोर्टल खुला

राजनांदगांव (दावा)। मुख्यमंत्री ज्ञान प्रोत्साहन योजना अंतर्गत छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल से प्राप्त मेरिट सूची को छत्तीसगढ़ छात्रवृत्ति पोर्टल के पब्लिक डोमेन में अपलोड कर दिया गया है। कक्षा 12वीं के मेरिट विद्यार्थियों के लिए प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने की शर्तों के अनुसार किसी महाविद्यालयीन संस्था में अध्ययनरत होना अनिवार्य है। वर्तमान में महाविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया जारी होने के कारण कक्षा 12वीं के मेरिट विद्यार्थियों के पंजीयन के लिए पोर्टल पर पृथक लिंक उपलब्ध कराया जाएगा। कक्षा 10वीं के मेरिट विद्यार्थियों के पंजीयन एवं सत्यापन के लिए छात्रवृत्ति पोर्टल पर 30 अगस्त को शाम 5 बजे तक लिंक उपलब्ध रहेगा।

थाना बागनदी पुलिस द्वारा सभी लंबित प्रकरणों का निराकरण कर 'जीरो पेन्डेन्सी' का लक्ष्य प्राप्त किया

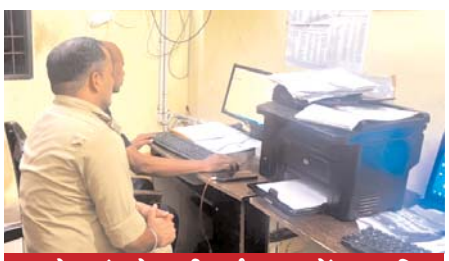

पुराने एवं नये सभी मर्ग प्रकरणों का वरिष्ठ अधिकारियों के त्वरित निराकरण के निर्देश पर लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता हासिल की

राजनांदगांव (दावा)। पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के सतत् दिशा निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर तथा अनुविभागीय अधिकारी पुलिस डोंगरगढ़ केशरीनंदन नायक के मार्गदर्शन एवं उक्त वरिष्ठ अधिकारियों के त्वरित निराकरण करने के निर्देश पर थाना प्रभारी नंदकिशोर गौतम के नेतृत्व में थाने में लंबित वर्ष 2025 एवं 2026 के मर्ग प्रकरणों की गहन जांच, आवश्यक साक्ष्यों का संकलन, पोस्टमार्टम रिपोर्ट, एफएसएल परीक्षण रिपोर्ट, चिकित्सकीय दस्तावेजों एवं गवाहों के कथनो का विधिसम्मत कार्यवाही पूर्ण कर मर्ग प्रकरणों का समयबध्द निष्पक्ष एवं गुणवत्तापूर्ण विवेचना/जांच कर सफलता पूर्वक निराकरण करते हुये मर्ग प्रकरणों में जीरो पेन्डेन्सी का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया जिससे त्वरित न्याय प्रक्रिया में सहायता मिल सके तथा पुलिस के प्रति जनता का विश्वास और अधिक सुदृढ़ हो।

इस उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक नंदकिशोर गौतम, उपनिरीक्षक देवादास भारती, सउनि भागवत प्रसाद धुर्वे, प्रधान आरक्षक संतोष मिश्रा एवं आरक्षक भूपेन्द्र तुमरेकी का व्यक्तिगत प्रयास एवं सराहनीय योगदान रहा।

आईटीआई टेड़ेसरा में नव कौशल पथ नई राह नया हुनर कार्यक्रम का हुआ आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था टेड़ेसरा में नवप्रवेशित प्रशिक्षणार्थियों के लिए 3 एवं 4 अगस्त 2026 को दो दिवसीय नव कौशल पथ नई राह नया हुनर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में औद्योगिक प्रशिक्षण, रोजगार एवं स्वरोजगार, अप्रेंटिसशिप तथा विभिन्न शासकीय योजनाओं की जानकारी दी गई। प्राचार्य श्री एसआर डोंगरे ने नवप्रवेशित प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया और प्रशिक्षण का महत्व बताया। कार्यक्रम में पीपीटी के माध्यम से विषय-वस्तु पर विषयवार जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के प्रथम दिवस संस्था की प्रभारी प्रशिक्षण अधीक्षक व प्रशिक्षण अधिकारी श्रीमती हेमलता चंदाने ने प्रशिक्षणार्थियों, प्रशिक्षण एवं संस्था का परिचय दिया। श्रीमती ममता बंजारे ने क्राफ्ट्समेन ट्रेनिंग स्कीम (सीटीएस), श्रीमती भारती देवांगन ने अप्रेंटिसशिप एक्ट (एनएपीएस), अनीश कुमार लाजरस ने परीक्षा एवं कम्प्यूटर बेस्ड टेस्ट (सीबीटी), नटवर लाल कटेन्द्र ने आईटीआई उत्तीर्ण होने के उपरान्त डिप्लोमा पाठ्यक्रम में लेटरल एंट्री, श्रीमती निष्ठा वाधवा ने राज्य की संस्थाओं में संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी।

इसी तरह कार्यक्रम के द्वितीय दिवस जिला रोजगार कार्यालय के अधिकारी श्रीमती शुभी जग्गी, संजय, कुरैशी द्वारा पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन (पीपीटी) के माध्यम से काउंसलिंग एवं मार्गदर्शन दिया गया। संस्था के अवधेश गुप्ता ने प्रशिक्षण उपरान्त रोजगार, नोहर सिंह ने उद्योगों की जानकारी दी। औद्योगिक प्रतिष्ठान जैन एग्रो कोपेडीह के प्रबंधक अनिमेष जैन ने उद्योगों में प्रशिक्षणार्थियों को उद्यमशीलता बढ़ाने के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया।

अनुच्छेद 370 हटाना राष्ट्रहित में ऐतिहासिक निर्णय-प्रतिमा पप्पू चंद्राकर

राजनांदगांव (दावा)। जनपद पंचायत अध्यक्ष प्रतिमा पप्पू चंद्राकर ने कहा कि 5 अगस्त 2019 का दिन भारतीय लोकतंत्र, राष्ट्रीय एकता और संविधान की सर्वोच्चता के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की महत्वपूर्ण भूमिका में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 एवं 35, के प्रावधान हटाकर ''एक राष्ट्र-एक संविधान'' के संकल्प को साकार किया गया। प्रतिमा पप्पू चंद्राकर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने देश की जनता से किया गया अपना वर्षों पुराना वादा पूरा कर यह साबित किया है कि भाजपा केवल घोषणाएं नहीं करती, बल्कि अपने संकल्पों को भी धरातल पर उतारती है। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 को हटाना भाजपा की वैचारिक प्रतिबद्धता और राष्ट्रहित के प्रति समर्पण का प्रमाण है।

उन्होंने कहा कि यह निर्णय केवल संवैधानिक बदलाव नहीं, बल्कि देश की एकता, अखंडता, सुरक्षा और सभी नागरिकों को समान अधिकार सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था। इसके बाद जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में विकास के नए अवसर सृजित हुए, लोकतांत्रिक संस्थाएं मजबूत हुईं तथा केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आम नागरिकों तक समान रूप से पहुंचने लगा। प्रतिमा पप्पू चंद्राकर ने कहा कि ''एक राष्ट्र-एक संविधान'' की भावना ने देश की एकता को और अधिक सशक्त बनाया है तथा यह निर्णय आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणास्रोत रहेगा।

विशेष फीचर

प्रधानमंत्री आवास योजना
विकसित छत्तीसगढ़ की मजबूत नींव

पक्के घरों से बदल रही गांवों की तस्वीर, आत्मसम्मान से भर रहा हर परिवार

हर गरीब परिवार के पास अपना पक्का घर हो, यह केवल एक योजना नहीं बल्कि सामाजिक न्याय का अभियान है। विकसित भारत के निर्माण में आवास, सम्मान और आत्मनिर्भरता की महत्वपूर्ण भूमिका है। **श्री नरेंद्र मोदी,** प्रधानमंत्री

> हमारी सरकार का लक्ष्य है, कि प्रदेश का कोई भी पात्र परिवार आवास जैसी मूलभूत सुविधा से वंचित न रहे। पक्का घर केवल चार दीवारें नहीं, बल्कि परिवार की सुरक्षा, सम्मान और बेहतर भविष्य की नींव है।
>
> **श्री विष्णु देव साय**
> मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

पक्का घर : सुरक्षा, सम्मान और समृद्धि का आधार

छत्तीसगढ़ में आवास योजना का नया अध्याय

छत्तीसगढ़ आज प्रधानमंत्री आवास योजना के प्रभावी क्रियान्वयन राष्ट्रीय उदाहरण बनकर उभरा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य ने आवास निर्माण को केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि जनकल्याण के व्यापक अभियान का स्वरूप दिया है। गांव-गांव तक पहुंची इस पहल ने लाखों जरूरतमंद परिवारों के जीवन में सुरक्षा, सम्मान और स्थावित्व का नया अध्याय जोड़ा है।

एक समय था जब प्रदेश के अनेक ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में परिवार कच्चे मकानों, झोपड़ियों और अस्थायी आवासों में जीवनयापन करने को मजदूर थे। बरसात में टपकती छतें, गार्मियों में असहनीय तापमान और प्राकृतिक आपदाओं के बीच जीवन संघर्ष का पर्याय बन चुका था। आज वही परिवार मजबूत पक्के मकानों में सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'सबके लिए आवास' के संकल्प को छत्तीसगढ़ सरकार ने मिशन मोड में धरातल पर उतारते हुए प्रदेश को देश के अग्रणी राज्यों में स्थापित किया है।

आवास से आगे बढ़कर सामाजिक परिवर्तन

प्रधानमंत्री आवास योजना ने केवल ईट और सीमेंट के ढांचे खड़े नहीं किए हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की नई इबारत लिखी है। प्रदेश के दूरस्थ वनांचल क्षेत्रों, आदिवासी बहुल इलाकों और नक्सल प्रभावित अंचलों तक विकास की मुख्यधारा पहुंचाने में इस योजना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आज हजारों गांवों में नए आवासों के साथ बिजली, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, गैस कनेक्शन, सड़क और डिजिटल सेवाओं का विस्तार हुआ है। इससे ग्रामीण जीवन की गुणवता में अभूतपूर्व सुधार देखने को मिला है।

आवास अब केवल रहने की जगह नहीं, बल्कि परिवार की सुरक्षा, बच्चों की शिक्षा, महिलाओं की गरिमा और सामाजिक सम्मान का आधार बन गया है।

नया घर, नई उम्मीद

सुशासन, तकनीक और पारदर्शिता का मॉडल

छत्तीसगढ़ सरकार ने योजना के क्रियान्वयन में आधुनिक तकनीक और सुशासन को प्राथमिकता दी है।

तकनीक से पारदर्शिता

- **डिजिटल मॉनिटरिंग** — हर आवास की प्रगति पर निरंतर नजर
- **जियो टैगिंग** — प्रत्येक आवास का भौगोलिक सत्यापन
- **सीधा लाभ** — हस्तांतरण लाभ सीधे हितग्राही के खाते में
- **जन सहभागिता** — आवास मित्र, पंचायत और स्थानीय हितग्राहियों की सक्रिय भूमिका
- **पारदर्शिता और जवाबदेही** — शिकायत निवारण और ऑनलाइन निगरानी

डिजिटल मॉनिटरिंग, जियो टैगिंग, ऑनलाइन सत्यापन, हेल्पलाइन सेवाएं और तकनीकी निगरानी तंत्र के माध्यम से प्रत्येक आवास की प्रगति पर लगातार नजर रखी जा रही है। इससे योजना में पारदर्शिता बढ़ी है और लाभ सीधे पात्र हितग्राहियों तक पहुंच रहा है।

आदिवासी अंचलों में विकास का नया अध्याय

छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में प्रधानमंत्री आवास योजना ने विकास की नई कहानी लिखी है। पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले हजारों परिवार अब पक्के और सुरक्षित घरों में जीवन यापन कर रहे हैं।

पीएम जनमन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के समनवित क्रियान्वयन से विशेष पिछड़ी जनजातियों तक विकास की किरण पहुंची है।

इन क्षेत्रों में आवास निर्माण के साथ-साथ सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के अवसरों का भी विस्तार हुआ है।

रोजगार और आत्मनिर्भरता को मिली नई दिशा

26 लाख से अधिक आवासों की स्वीकृति

विशेष पिछड़ी जनजाति परिवारों के लिए 33000 आवासों की स्वीकृति

आत्मसमर्पित पूर्व नक्सलियों के लिए विशेष 15000 आवास

महिला स्व-सहायता समूहों की भागीदारी

निर्माण सामग्री आपूर्ति और भवन निर्माण सहयोग से विकास की मुख्यधारा से जुड़ते परिवार और बढ़ती आत्मनिर्भरता।

जब घर बना, तब बदली जिंदगी

बस्तर, सरगुजा, कांकेर, नारायणपुर, बीजापुर, दंतेवाड़ा, जशपुर, बलरामपुर, कोरिया, सक्ती, मुंगेली और प्रदेश के अन्य जिलों में ऐसे हजारों परिवार हैं जिनके लिए पक्का मकान कभी एक सपना था आज वही सपना साकार हो चुका है। पक्का घर मिलने के बाद बच्चों की पढ़ाई बेहतर हुई है, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं कम हुई है और परिवार में आत्मविश्वास बढ़ा है।

महिलाओं के नाम पर बढ़ रहा स्वामित्व और सम्मान

योजना के अंतर्गत बड़ी संख्या में आवास महिलाओं के नाम अथवा संयुक्त स्वामित्व में स्वीकृत किए गए हैं। इससे महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण मजबूत हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज महिलाएं केवल घर की जिम्मेदारी नहीं संभाल रहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक योजनाओं, बच्चों की शिक्षा और सामाजिक निर्णयों में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

जल संरक्षण के साथ हरित विकास

छत्तीसगढ़ सरकार ने आवास निर्माण को पर्यावरण संरक्षण से भी जोड़ा है। 'मोर गांव-मोर पानी' जैसे अभियानों के माध्यम से नए आवासों में वर्षा जल संचयन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह पहल भविष्य के लिए जल संरक्षण और सतत विकास की दिशा में बढ़ा कदम है।

डिजिटल छत्तीसगढ़, मजबूत कदम

ऑनलाइन भुगतान व्यवस्था, डिजिटल सत्यापन और तकनीकी निगरानी ने योजना की विश्वसनीयता बढ़ाई है। डिजिटल माध्यमों से शिकायत निवारण और प्रगति समीक्षा की व्यवस्था ने सुशासन की नई मिसाल प्रस्तुत की है।

रोजगार और आत्मनिर्भरता को मिली नई दिशा

प्रधानमंत्री आवास योजना ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई ऊर्जा प्रदान की है। आवास निर्माण कार्यों से हजारों स्थानीय श्रमिकों, राजमिस्त्रयों, निर्माण सामग्री विक्रेताओं और स्वयं सहायता समूहों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। राज्य सरकार द्वारा कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से बड़ी संख्या में युवाओं को निर्माण कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया है। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार बढ़ा है और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां तेज हुई हैं। कई जिलों में महिलाओं के स्वयं सहायता समूह निर्माण सामग्री आपूर्ति, भवन निर्माण सहयोग और अन्य सेवाओं से जुड़कर आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

संवाद-48147/3

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण)

विकसित भारत – विकसित छत्तीसगढ़ की ओर

प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से
समृद्ध, सुरक्षित और आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत की ओर

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक दीपक भाई बुद्धदेव द्वारा स्वस्तिक ऑफसेट एण्ड स्क्रीन प्रिंटर्स, बल्देव बाग रोड, राजनांदगांव से मुद्रित कर प्रकाशित। सम्पादक दीपक भाई बुद्धदेव।
* समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। * किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र राजनांदगांव रहेगा। फोन नं. - 07744-406631, e-mail : dainikdawa_rjn@yahoo.com